राज
विनाश
नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव

प्रलय के बाद हमेशा होता है, *विनाश!* और इस विनाश के कई कारण हो सकते हैं। मानवों की बिगड़ती, चरमराती और टूटती सामाजिक मान्यताएं, मानवों के बीच में आणविक युद्ध... और या फिर यह विनाश पृथ्वी के बाहर से भी आ सकता है...

...उल्का, सौर तूफान या धूमकेतु के रूप में। हमारे पृथ्वी पर जीवन के विनाश और या फिर पृथ्वी के ही विनाश की कई तारीखें ज्योतिषी, गणना द्वारा बता चुके हैं। इनमें से कुछ तारीखें तो बिना किसी घटना के पार हो गईं, और कुछ तारीखें अभी आनी शेष हैं। इनमें से ही एक तारीख है 25 अक्टूबर 1991! जिस दिन होगा... पृथ्वी का...

विनाश

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विठ्ठल कांबले, विनोद कुमार
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

जब कभी भी बड़ी आग लगती है तो वह अक्सर एक छोटी सी चिंगारी से ही शुरू होती है-
और वह छोटी सी चिंगारी आज महानगर की सड़कों पर घूम रही है-
पुरानी नगरी 13 K.M.
बस! पन्द्रह मिनट बाद...
...मैं अपनी मंज़िल पर होऊंगा...
...यह क्या?
स्टाप! यानी रुको!
STOP
यह अपुन का चेक पोस्ट है, बाप! रोड टैक्स देकर जाने का इधर! ला निकाल माऽऽऽल!
अच्छा! और अगर न दूं तो?
तो तेरे जैसे शरीफ को हलाल करने में अपुन को बहुत तकलीफ होएगा।
EXPLOSIVE
विस्फोटक
लेकिन इससे पहले कि वह 'टैक्सकलेक्टर' उस 'शरीफ' को हलाल कर पाता...
स... सांप!...
...यानी आ गया...

...नागराज! मर गस्ला, बाप! तेरे से भागकर ही तो अपुन शहर से इस बियावान में अड्डा बनास्ला था। तू इधरिच भी पहुंच गया!
नागराज तुम जैसे दुच्चों का पीछा जहन्नुम तक नहीं छोड़ेगा, तात्या!...
धाड़
तड़ाक
...अब तुम लोग जानते हो न कि तुमको क्या करना है? या मैं समझाऊं?
मैं जानता है बाप! तेरे पास अपुन को पुलिस स्टेशन पहुंचाने का टाइम नहीं है। अपुन चमचा के साथ उधर जाकर अपने खिलाफ रिपोर्ट लिखवाकर लॉकअप में बन्द हो जास्गा।
ठीक समझे! मेरा एक-एक सांप तुम्हारे साथ तब तक रहेगा, जब तक तुम लॉकअप में बन्द नहीं हो जाते!
अब जाओ!
ध...बहुत, बहुत धन्यवाद नागराज!
उसकी कोई जरूरत नहीं है। अब आप आराम से अपनी यात्रा पर जा सकते हैं।
नागराज अगर पीछे की सीट पर झांककर देख लेता, तो शायद आज दुनिया की शक्ल ही कुछ और होती-
लेकिन ऐसा नहीं हुआ-
क्योंकि होनी को कुछ और ही मन्जूर था-

अब देखूं कि इस 'सृष्टि पुराण' में और क्या लिखा हुआ है। यह प्राचीन ग्रंथ हमारे खानदान में सैकड़ों वर्षों से रखा हुआ है। कहते हैं कि इसे हमारे एक पूर्वज को देवताओं ने यह कहकर दिया था कि जब सृष्टि का अन्त होगा, तब सिर्फ यह पुराण बचेगा। और जिसके हाथों में यह पुराण होगा, वह प्रभु की सहायता से सृष्टि की पुनः रचना करेगा!

जैसे मनु की इस सृष्टि की रचना में प्रभु ने मदद की थी।

और अगर प्राचीन ग्रंथ में रखा यह नक्शा सही है...

... तो इसमें लिखी वह भविष्यवाणी भी सत्य होगी ... कि संवत् 2054 में आकाश से प्रभु का कहर टूटेगा और पापियों का विनाश हो जाएगा!...

... क्योंकि उस युग के उस समयकाल में मानव इतना पापी और भ्रष्ट हो जाएगा कि उसको नष्ट करने के अलावा प्रभु के सामने और कोई रास्ता नहीं होगा।

EXPLOSIVE
विस्फोटक

इसके अनुसार तो प्रलय की वह तारीख कुछ ही दिन बाद है। अब अगर मुझे इस नगरी में रखा वह 'जीवन-दंडक' मिल जाए जो उत्पत्ति भी कर सकता, और नाश भी...

... तो इस ग्रंथ की एक-एक बात पर सत्यता की मुहर तुरन्त लग जाएगी। ...

नक्शे के अनुसार इसी स्थान के नीचे दबा होना चाहिए, वह 'सृष्टि-केन्द्र' जहां पर वह दंडक रखा है। मैं वहीं पर विस्फोटक लगाता हूं।
वह व्यक्ति डायनामाइट की छड़ें जगह-जगह पर फिट करने में व्यस्त हो गया-
EXPLOSIVE विस्फोटक
बडमममम
और फिर-एक के बाद एक तीन-चार धमाकों से पुरानी नगरी का सन्नाटा कांप उठा-
DETONATOR
इस धमाके के चन्द गवाह वहां के वासी कबीले वाले और मूक विशालकाय छिपकलियां भयभीत होकर इधर-उधर दुबक गए-
और इन धमाकों से बने उस छोटे से प्रवेश द्वार में घुस गया वह रहस्यमय और धुनी व्यक्ति-
कमाल है! इस स्थान में घुप्प अंधेरे के बजाय हल्का प्रकाश है! इन गोलों के द्वारा जिसमें न जाने क्या भरा हुआ! यह तो वास्तव में देवों की नगरी लगती है।
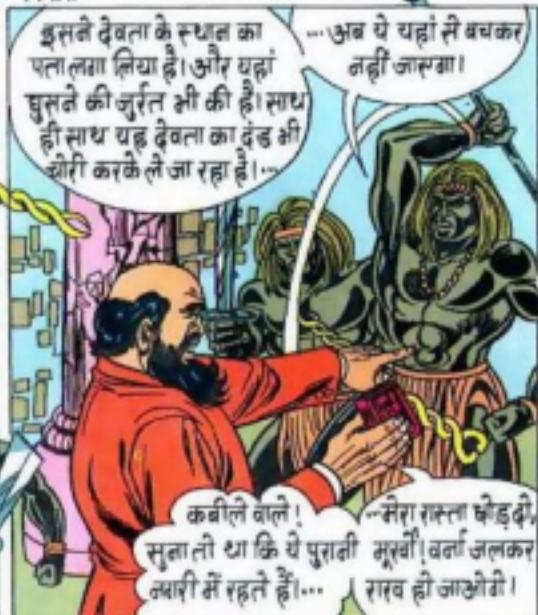
मन्दिर से दिखने वाले उन गलियारों में बेखौफ बढ़ता चला गया वह शख्स-
जो उस विशाल कक्ष में जाकर खुले, जहां पर स्थापित थी वह विशालकाय मूर्ति-
विशाल मूर्ति! यही... यही होंगे पृथ्वी को नया जीवन देने वाले देवता... क्योंकि इनके चरणों में रखा हुआ है वह 'जीवनदंडक' जिसकी तलाश में मैं आया हूं।...
...लेकिन 'जीवन-दंडक' के साथ कुछ और भी रखा हुआ है...
...और साथ में जिस लिपि में ग्रंथ लिखा है उसी लिपि में यहां पर कुछ लिखा हुआ है।
लिखा है। '...जब पृथ्वी पर पाप बढ़ेंगे, तब प्रभु का रूप पृथ्वी पर आएगा। जो उसकी शरण में पाप त्याग कर आएंगे, वे ही बचेंगे, वर्ना सभी का विनाश हो जाएगा... ओह! मानव नष्ट नहीं हो सकते! ...
... मैं प्रभु का दूत बनूंगा। मैं मानवों को बचाऊंगा।

मानवो, तैयार हो जाओ! तुम्हारा 'मसीहा' आ रहा है।
वो रहा! खत्म कर दो इसको।...
इसने देवता के स्थान का पता लगा लिया है। और यहां घुसने की जुर्रत भी की है। साथ ही साथ यह देवता का दंड भी चोरी करके ले जा रहा है।...
...अब ये यहां से बचकर नहीं जाएगा।
कबीले वाले! सुना तो था कि ये पुरानी नगरी में रहते हैं।...
...मेरा रास्ता छोड़ दो, मूर्खों! वर्ना जलकर राख हो जाओगे।
सांय
'जीवन दंडक' यमराज के पाश की तरह तुम्हारे प्राण...
...अरे! यह तो कुछ भी नहीं कर पा रहा है।
अ... अब क्या होगा? क्या मानवजाति को बचाने से पहले मेरे ही प्राण चले जाएंगे?
श... शायद ये 'ब्लैक बॉक्स' कुछ कर सके।
घबराहट में थिरकती मसीहा की उंगलियां न जाने ब्लैक बॉक्स के किस बटन पर दब गईं...

...कि उससे एक अनोखी संगीत लहरी निकलकर वातावरण में तैरने लगी–

और कबीले वाले अपने स्थान पर जड़वत् हो गए। उनकी आंखें सम्मोहित होकर फैलने लगीं–

वाह! यह तो सचमुच प्रभु का चमत्कार है...

...इस चमत्कार ने ही मुझे मृत्यु के मुंह से बचाया है।...

...अब मैं पूरी पृथ्वी को मृत्यु से बचाऊंगा।

लेकिन वक्त बहुत कम है। मुझे बहुत थोड़े से समय में पूरी दुनिया में प्रभु का संदेश फैलाना है।...

...और इसके लिए मुझे आवश्यकता होगी धन की।...

...और प्रभु के काम के लिए मैं कहीं से भी धन लाऊंगा। चाहे मुझे चोरी ही क्यों न करनी पड़े। परन्तु मुझे साथ ही साथ सावधानी भी बरतनी होगी कि कहीं कार्य पूरा करने से पहले ही मैं पकड़ न लिया जाऊं।

महानगर, नागराज के संरक्षण में है। उसकी शक्तियां मेरे लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं। इसलिए मैं अपना अभियान पास के ही दूसरे मेट्रो राजनगर से शुरू करूंगा। वैसे तो वहां भी ध्रुव से खतरा है, पर उसके पास कोई शक्ति नहीं है। उससे तो मैं निबट ही लूंगा।

अगले दिन राजनगर में-
आहा! जहांपनाह आज नौ बजे सोकर उठे हैं!
उम्म!
रात-रात भर गश्त करनी पड़े तो पता चले! लेकिन तुझे मेरे देर से उठने से क्या फर्क पड़ता है?
इस घर में एक तुम ही तो इंटेलीजेंट हो, भइया! तुमसे कुछ पूछना था!
दरअसल, छुट्टियों का टाइम काटे नहीं कटता। इसी लिए अखबार में एक पहेली भर रही थी।
हुम! वह कौन सा पक्षी है जो रात को जगता है और दिन में सोता है?
उल्लू! इतना भी नहीं जानती?
नहीं आता तो मत बताओ! गाली क्यों दे रहे हो?
अरे! मैं गाली कहां दे रहा हूं? मैं तो बता रहा हूं। वह पक्षी उल्लू है।
हां हां! सही तो बताया! हुम! अब बताओ इसकी शक्ल देखना अच्छा माना जाता है या खराब?
बहुत खराब!
अब... इसकी एक खूबी बताओ?
यह अपनी गर्दन को पूरा 180 डिग्री पर घुमा सकता है। ऐसे। समझी?
हां समझी!
क्या समझी?
यह पक्षी तुमसे काफी मिलता-जुलता है। इसकी जगह तुम्हारा नाम भी लिखा जा सकता है।
अच्छा! तो तू मेरा मजाक उड़ा रही थी। ठहर तो!

मम्मी! मुझे इस 'ट्यूबलाइट' से बचाओ!...
ओफ्फो श्वेता! अब तू कॉलेज में आ गई है। बचपना छोड़।
मम्मी, तुम जानती हो? इसने मुझे...
झे...झे...
झूठ नहीं! झूठ नहीं बोलना।
अब ये झगड़ा छोड़ो। सुनो ध्रुव! जल्दी से तैयार हो जाओ...
...और कमांडो हैडक्वार्टर जाने से पहले बैंक में होते जाना। सुबह-सुबह मैनेजर साहब का फोन आया था। तुमसे कुछ जरूरी कागजातों पर दस्तखत कराने हैं।
और मेरे प्यारे भइया...
...बैंक के बगल में ही मैंने अपना 'वॉकमैन सी.डी.' बनने दिया था। उसे भी लेते आना।
उल्लू दिन में काम नहीं करते।
तुम तो बुरा मान गए भइया... बुरा तो उल्लू को मानना चाहिए।
क्या?
मेरा मतलब... तुम उल्लू थोड़े ही हो, जो बुरा मान जाओगे! ले आना न भइया! प्लीऽऽऽज!
ठीक है! ठीक है! ले आऊंगा! अब मेरे कान मत खा!
और सुनो! उड़ते-उड़ते मत जाना। मेरा मतलब मोटर साइकल धीरे चलाना।
ये चुलबुली बूढ़ी हो जाए, तो भी नहीं सुधरेगी!

इधर ध्रुव के लिए एक नए दिन की शुरुआत हो रही थी, और उधर नागराज के लिए एक नई मुसीबत पैदा हो रही थी–

वैसे तो हमारा धंधा एक ही है। अपराध करना। लेकिन हमारे इस धंधे में कम्पीटिशन बहुत है। इसलिए हम एक दूसरे का दुश्मन बनने पर मजबूर हैं!...

... तुम भी मिस किलर की दुश्मन हो नगीना और नागदन्त भी। फिर भी तुम दोनों ने मुझे जेल में सुरंग बनाकर वहां से क्यों निकाला ? ★

मुझसे अपनी तंत्र शक्ति के द्वारा सुरंग बनवाने का आइडिया मेरा नहीं, नागदन्त का था। नगीना ऐसे काम खुले आम करती है। चोरों की तरह नहीं।

चोर!

डायन तंत्रिका! तेरी हिम्मत कैसे हुई मुझे चोर कहने की? मैं तुझे चीर कर रख दूंगा।

शांत, शांत! पहले यह तो बताओ कि मुझे तुम लोगों ने जेल से निकाला क्यों?

नागराज के कारण!

नागराज ? नागराज ने क्या किया ?

तुम तो जेल में थी। इसलिए तुमको ज्यादा पता नहीं होगा।

नागराज ने हम सबको अपंग बना दिया है। नागदन्त के मस्तक में उसने एक ऐसा सांप प्रविष्ट करा दिया है, जो कभी भी इसकी खोपड़ी फाड़कर निकल सकता है। मेरा 'तंत्र मुंड' क्षतिग्रस्त करके उसने मेरी तंत्र-शक्तियों को सीमित कर दिया है। नागमणि का कहीं पता नहीं चल पा रहा है।...

★ मिस किलर को नागराज ने जेल कैसे पहुंचाया था? यह जानने के लिए पढ़ें "नागराज का अंत"

और नागपाशा तो अमर होने के कारण हम सबको कुछ समझता ही नहीं। वैसे नागराज ने उसकी भी जमकर धुलाई की है। तुम्हारा अपराध साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने से तुम्हारी शक्ति भी एक चौथाई रह गई है।...

कोई नई बात करो नगीना! यह कोशिश तो हम पिछले कई वर्षों से लगातार करते आ रहे हैं। पर कभी सफल नहीं हुए।

... नागराज ने हम सबको सिर्फ आर्थिक ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से काफी नुकसान पहुंचाया है। और जब तक वह जिन्दा रहेगा, यही करता रहेगा। इस झगड़े का सिर्फ एक ही अन्त है। नागराज की मौत!

इस बार होंगी मिस किलर! इस बार होंगी। क्योंकि अब तक इस नागराज पर हम अलग-अलग हमला करते थे एक-एक करके! और नागराज हमको पीट देता था!

पर इस बार हम एक साथ नागराज पर हमला करेंगे। हमारी संयुक्त शक्ति के सामने वह कभी टिक नहीं पाएगा। तुमको जेल से छुड़ाने का यही मकसद है हमारा!

हम्म! ख्याल तो अच्छा है। पर और महाखलनायक कहां हैं? उनको भी साथ मिला लो!

बाकियों में शाकूरा तो अपने ग्रह वापस चला गया है। नागमणि को हम ढूंढ नहीं पाए। और नागपाशा हमारे साथ आने को तैयार नहीं हुआ।

खैर जाने दो! हम तीन ही बहुत हैं। अब तुम मुझको नागराज के उन-उन कारनामों के बारे में बताओ, जो उसने मेरे जेल में रहने के दौरान किए...

... और फिर तुम बनाने दो मिस किलर की एक खतरनाक स्कीम! नागराज की मौत की स्कीम!

वैसे तो 'तीन तिगाड़ा- काम बिगाड़ा' कहावत मशहूर है, लेकिन इस बार किसका काम बिगड़ने वाला था, यह तो वक्त ही बता सकता है—

फिल हाल तो हम आपको वहां लिए चलते हैं जहां पर सच मुच किसी का काम बिगाड़ने वाला है।
ना ना ना ♫ नारे ♫ नारे ♫ ... नारे ♫♫ धमाकेदार गाना है!
बैंक ऑफ इं
STOR
RAJ
सर्विस सेंटर वाले ने कहा था कि आधे घंटे तक लगातार चलाकर सी.डी. प्लेयर चेक कर लेना।
अब तो मैं यह पूरा गाना सुनकर ही कान से हैडफोन निकालूंगा...
...वर्ना गाना सुनने का मौका कहां मिलता है। ♫ हो साड्डे नाल रवोगे ते ऐश करोगे ♫
अब बैंक वाले हंसे तो हंसे। अरे! कोई मेरी हैलो का जवाब क्यों नहीं दे रहा? सब पुतले जैसे क्यों बैठे हैं?
DEPOSITS
CASH
इन सबकी आंखें तो पथराई हुई हैं, जैसे किसी ने इनको सम्मोहित कर दिया हो। पर यह कैसे संभव है? इतने सारे लोगों को एक साथ कोई सम्मोहित कर ही नहीं सकता।
यह काम तो सिर्फ मैण्ड्रेक कर पाता था। और वह भी कॉमिक में। असलियत में नहीं।
ओह! मुझ पर भी नींद सी छा रही है। अजीब से कंपन मेरे शरीर से टकरा रहे हैं!
ध्रुव ने अंजाने में अपने कानों से हैडफोन के तारों को खींच दिया-

ओह! तो ये है बैंक लुटेरा! संगीत की आवाज इसी के हाथ के यंत्र से आ रही है। लुटेरा मगर अपने-आपको मसीहा कहता है।... पर यह जा रहा है... ...और इसका संगीत सम्मोहन मुझे उठने तक नहीं दे रहा है।...

...मैं इसको भागने नहीं दे सकता। मुझे यह सम्मोहन तोड़ना होगा।...

ध्रुव के हाथ में दर्द की एक तेज लहर दौड़ गई—

और उसका दिमाग काफी हद तक सम्मोह से आजाद हो गया—

ओह! वह बाहर भाग चुका है।

मुझे उसको रोकना होगा!

मसीहा को ध्रुव ने रोक ती जरूर लिया-
आह!
मेरा ब्लेक बॉक्स!
लेकिन अगले ही पल कई शिकंजों ने उसके शरीर को अपनी गिरफ्त में ले लिया-
अरे! यह क्या? छोड़ो मुझे! वर्ना वह मसीहा, बैंक के पैसे लेकर भाग निकलेगा... उसकी पकड़ो मुझे नहीं! ये तो मेरी बात ही नहीं सुन रहे हैं।
हा हा हा! बैंक के बाहर घूम रहे ये नागरिक भी मेरे संगीत से सम्मोहित हो गए हैं। और मुझ पर हमला होते देखकर ये ध्रुव को पकड़ रहे हैं। यानी वह ब्लेक बॉक्स जिसके पास हो, सम्मोहित प्राणी उसका गुलाम बन जाता है। लेकिन अब बॉक्स कहीं गिर चुका है, और इस भीड़ में उसको ढूंढ़ पाना असंभव काम है।

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

ये निर्दोष नागरिक सम्मोहन का शिकार हैं। इसलिए मैं इन पर हाथ नहीं उठा रहा हूं।
लेकिन इनका सम्मोहन तोड़ने के लिए मुझे कुछ न कुछ तो करना ही... मैं समझ गया कि मुझे क्या करना है।
सबसे पहले मुझे इनके शिकंजे से छूटना होगा।
ध्रुव तेजी से बैंक की तरफ वापस भागा—
और भीड़ भी उसके पीछे-पीछे भागी—
लेकिन ध्रुव, भीड़ के पहुंचने से पहले ही बैंक के गार्ड की बन्दूक लेकर दोनों गोलियां दाग चुका था—
दो जोरदार धमाके हुए—
बड़ाम
धड़ाम
आह!
ओह!
और ध्रुव के पीछे बढ़ती भीड़ में सभी के कान झनझना उठे—

और इस तेज आवाज ने सभी का सम्मोहन तोड़ दिया-
अरे! मैं अभी तक बैंक के पास ही खड़ा हूं! पर क्यों?
समझ में नहीं आ रहा है कि मैं यहां क्या कर रही हूं? मेरा तो इस बैंक में खाता भी नहीं है!
मुझे तो कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा। मैं बहरा हो गया क्या?
ठीक वैसा ही हुआ, जैसा मैंने सोचा था।
धमाकों के शॉक के कारण ये सम्मोहन से आजाद हो गए हैं।
और इस तेज धमाके को सुनने के बाद इनके कान कुछ देर तक और कुछ सुनने की स्थिति में नहीं होंगे।...
...और इससे पहले कि शरीर कंपनों के जरिए यह संगीत इनको सम्मोहित कर सके, मैं ब्लैक बॉक्स को ढूंढ़कर...
...इस संगीत को बन्द कर दूंगा!
ध्रुव, ब्लैक बॉक्स पर उभरे बटनों को तब तक दबाता चला गया जब तक वह अजीब संगीत बंद नहीं हो गया-
मुसीबत तो टल गई थी लेकिन अपने पीछे कुछ सवाल भी छोड़ गई थी-
यह चक्कर तो खत्म हुआ। पर यह 'ब्लैक बॉक्स' है क्या बला,
और इसमें से यह संगीत कैसे निकलता है? ऐसा संगीत तो मैंने पहले कभी नहीं सुना! और इससे भी बड़ा सवाल यह है कि यंत्र उस मसीह के पास आया कैसे?

शायद इसकी कार में से कोई सूत्र मिल सके। यह क्या है?...
...किसी पुराने कागज का रोल लगता है!
यह तो कोई नक्शा है। किसी प्राचीन नगरी का नक्शा लगता है। ऊपर लिखा भी है... देवनगरी!...
...बाकी सब अजीब सी भाषा में लिखा है।
यह 'मसीहा' राजनगर में बैंक लूटने ज्यादा दूर से नहीं आया होगा! और इस शहर से सबसे पास जो ज्ञात प्राचीन नगरी है, वह महानगर के पास स्थित 'पुरानी नगरी' है।...
...मुझे महानगर जाकर छानबीन करनी होगी। और इसमें मुझे नागराज की सहायता लेनी होगी!
नागराज को खुद ही सहायता की जल्दी ही जरूरत पड़ने वाली थी-
पुलिस स्टेशनों में दर्ज रिपोर्टों के अनुसार पिछले दो घंटों में इस इलाके में तीन वारदातें हो चुकी हैं।

लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इस इलाके में घूम रहे मेरे कई जासूस सर्पों में से एक ने भी मुझे मानसिक संकेत भेजकर इन अपराधों के बारे में सूचित नहीं किया। और मेरे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि ऐसा क्यों हुआ?
परन्तु कारण जानते ही नागराज की आँखें आश्चर्य से फैल गईं-
यह क्या? कुछ दूसरे सांपों ने मिलकर मेरे सर्पों को मार डाला है।
पर ऐसे सांप आए कहां से जो मेरे सर्प सैनिकों को मार सकें?
ये नाग शक्तियां मेरे शरीर के अलावा और कहां से आ सकती हैं, नागराज!
नागदन्त! तू? परन्तु तेरी नाग-शक्तियां तो मैंने ले ली थीं। और... और...
और मेरे मस्तक में नागश्री को बैठा दिया था ताकि वह मेरा खोपड़ा तोड़ सके। पर उसने ऐसा क्यों नहीं किया, यही जानना चाहते हो न?...
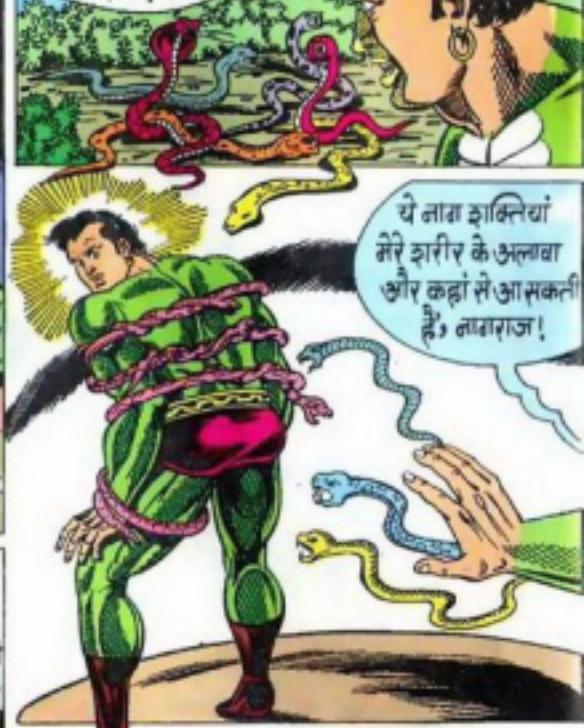
...तो एक दुःखद समाचार सुन ली! नागश्री अब मेरे शरीर में तो क्या, इस ब्रह्माण्ड में भी कहीं नहीं है। मार डाला है मैंने उसे!
मार डाला है! असंभव! तुम उसको मार ही नहीं सकते थे। किसी तरह भी नहीं!
मैंने उसको कैसे मारा, इसकी चिन्ता छोड़ दे नागराज! तू कैसे मरने वाला है, यह सोचकर डर!
ओह! तू मुझे अपने सर्प-बंधनों में कैद करके वार करना चाहता है...
...लेकिन तू यह भूल गया कि नागसम्राट नागराज को कोई भी सर्प बंधन बांध कर नहीं रख सकता। अब तू अपनी जान की खैर मना!
नागराज ने नागदन्त पर विष फुंकार छोड़ी, लेकिन नागदन्त ने उस फुंकार को बीच में ही काट दिया-
बड़े आश्चर्य की बात है! अपने जन्म की कथा जानने के बाद यह तो मुझे पता चल गया है कि मेरे अन्दर देव कालजयी का विष है...
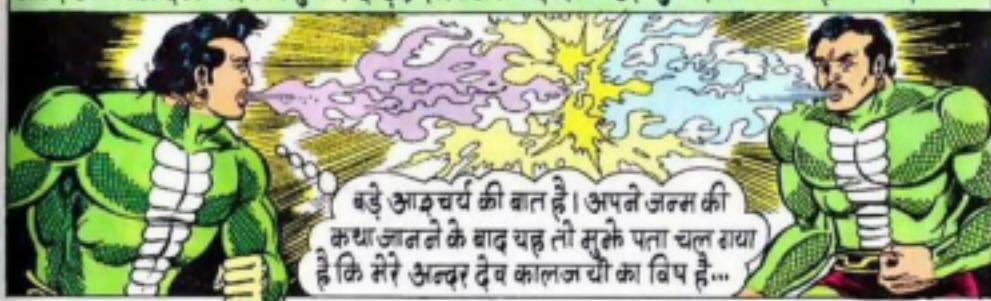
...और यही मेरी विष की भयंकरता का कारण है। परन्तु नागदन्त को तो प्रोफेसर नागमणि ने बनाया है। फिर भी यह मेरे जितना ही भयंकर विष कैसे उगल लेता है?
खैर! यह मैं बाद में सोचूंगा। अभी तो नागदन्त को काबू में करने के लिए...
...मेरी शारीरिक शक्ति ही काफी होनी चाहिए।
धड़ाक
लेकिन नागदन्त में भी उन सर्प शक्तियों की ही ताकत थी–
अनगिनत सर्पों की शक्ति से भरा नागराज का एक करारा वार नागदन्त के शरीर से टकराया–
आह! आश्चर्य है। नागदन्त में तो सारी शक्तियां वापस आ गई हैं। पर कैसे?... और... और यह नागश्री को कैसे मार पाया?
नागराज के मस्तिष्क में घुमड़ रहे इस सवाल का जवाब...

...पास में ही मौजूद था-
नागदन्त फिलहाल तो नागराज को बराबर की टक्कर दे रहा है, लेकिन यह ज्यादा देर तक नागराज के सामने टिक नहीं पाएगा...
...क्योंकि इसकी सर्प-शक्तियां अभी भी पूरी तरह से वापस नहीं आ पाई हैं!...
...अब नागराज शीघ्र ही अपनी सर्प सेना का प्रयोग करेगा, और नागदन्त कमजोर पड़ने लगेगा...
...और वही समय होगा मेरे मैदान में आने का।
मिस किलर ने नागराज की फाइटिंग-स्टाइल का बड़ी बारीकी से अध्ययन किया था। क्योंकि शीघ्र ही नागराज ने वही किया, जो मिस किलर ने सोचा था-
ऐसे लड़ते रहने से नतीजा नहीं निकलेगा।
इसको सर्प पाश में जकड़ना होगा।
नागदन्त ने भी जवाबी हमला किया, और दोनों की सर्प-शक्तियां आपस में गुंथ गईं-
लेकिन नागराज अपने हमले की तीव्रता को और तेज करता चला गया। नागदन्त की सीमित नाग शक्तियां अब कमजोर पड़ने लगी थीं-

और कुछ ही पलों बाद नागदन्त, नागराज के सर्प शिकंजों में कैद था-

मैं नहीं जानता कि तू नागश्री से आजाद कैसे हुआ! लेकिन इस बार मैं कुछ पक्का इन्तजाम करूंगा! इस बार मैं तुम्हारे शरीर में नागफनी सर्प को प्रविष्ट कर रहा हूं...

...यह तुम्हारे रक्त में मिश्रित विष को चूस लेगा, और फिर उस जहर में ही जिन्दा रह सकने वाले सूक्ष्म सर्प कभी पनप ही नहीं पाएंगे।

लेकिन इससे पहले कि नागफनी सर्प पूरी तरह से बाहर आ पाता...

चिट पिट पिट पिट

...नागराज के शरीर में कुछ कैप्सूल आ धंसे-

ओह! यह क्या?

किसने मुझ पर गोली चलाने की मूर्खता की है?

मैंने, नागराज! और न तो मैंने मूर्खता की है, और न ही तुम पर गोली चलाई है।

मिस किलर! तू नागदन्त के साथ। यानी यह सब मेरे लिए बिछाया गया एक जाल था?

हा हा हा

'था' नहीं, 'है' बोल नागराज! और तू इस जाल में ऐसे फंस गया, जैसे गोंद में मक्खी।

ऐसे जाल तुम लोग बहुत बार बिछा चुके हो मिस किलर! लेकिन नागराज को अब तक मार सकने में सफल नहीं हो पाए!

इस बार सफल होंगी नागराज ! जरूर सफल होंगी। तू जानना चाहता था न कि नागदन्त की शक्तियां वापस कैसे आईं ? मैं लाई नागदन्त की शक्तियां वापस...

... मैंने एक बहुत छोटा सा यंत्र बनाया। रक्त में मौजूद लाल रक्त कणों से भी छोटा। और इस यंत्र की ऐसी कंप्यूटर प्रोग्रामिंग कर दी कि रक्त में मौजूद सूक्ष्म सर्पों को समाप्त कर दे...

...और फिर इस यंत्र को मैंने नागदंत के शरीर में इंजेक्शन के द्वारा डाल दिया!...

...उस वक्त नागदन्त के शरीर में सिर्फ एक ही सूक्ष्म सर्प था नागश्री। क्योंकि वह अन्य सर्पों को पनपने से पहले ही खत्म कर दे रहा था...

...इससे पहले कि नागश्री संभल पाता, मेरे यंत्र ने उसे खत्म कर दिया...

... नागदन्त के शरीर में सर्प फिर से पनपने लगे और उसकी सर्प शक्तियां वापस आ गईं। अब वही सूक्ष्म यंत्र भरे कैप्सूल मैंने तेरे शरीर में घुसा दिए हैं!

उन दर्जनों यंत्रों ने अब तक तेरे रक्त में मौजूद सर्पों का विनाश शुरू भी कर दिया होगा।

ताड़

देख ले ! तुझे कमजोरी आनी शुरू हो गई है।

तेरे यंत्र मुझे मार नहीं सकते, किलर ! उनकी 'पॉवर' कभी न कभी तो खत्म होगी ही। और उन यंत्रों के निष्क्रिय होते ही मेरे रक्त में सर्प फिर से पनपने शुरू हो जाएंगे !

...तंत्र मुंड' के समान ही मैं इसके जरिए अपनी तंत्र शक्ति का वार तुझ पर कर सकती हूं। और इस बार तू इसे मेरे शरीर से अलग करके मुझे बेबस नहीं कर सकेगा, क्योंकि इस बार पहले ही तुझे बेबस कर दिया है हम तीनों ने मिलकर!

आह! कमजोरी तेजी से बढ़ती जा रही है और मेरे शरीर से सर्प भी बाहर नहीं आ रहे हैं। मिस किलर के यंत्र बहुत तेजी से काम कर रहे हैं।

...इस वक्त मुझे इस जाल से निकलने के लिए किसी मदद की बहुत सख्त जरूरत है। वर्ना शायद ये तीनों अपने नापाक इरादों में कामयाब हो जाएंगे!
...कि मदद उससे कुछ ही कदमों की दूरी पर खड़ी हुई थी-
मैं पांच मिनट से यहां खड़ा सारी बातें सुन रहा हूं। पहले इस लड़ाई में कूदने से कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि मैं इन विलेनों की ताकत को नहीं जानता था...
...लेकिन अब मुझे काफी कुछ अन्दाजा लग गया है। इसलिए अब इस लड़ाई में कूदकर नागराज की मदद करने का वक्त आ गया है...
नागराज फिलहाल यह नहीं जानता था...
सिर्फ चन्द लम्हे ही बचे थे-
इस बार हमारे संयुक्त वार तेरी जान निकाल लेंगे नागराज!...
...और तुम्हें बचाने वाला भी कोई नहीं...
...कौन?
ध्रुव! तुम यहां कैसे?
हूऊऊऊऊऊऊऊ
तुमसे कुछ काम था। तुम्हारे दोस्त ने बताया कि तुम इस इलाके की तरफ आए हो!

यह कौन था?
सुपर कमांडो ध्रुव! राजनगर में रहता है, और नागराज को वहीं से जानता है। हालांकि इसके पास कोई सुपर पॉवर नहीं है, लेकिन फिर भी यह कई दिग्गज विलेनों को धूल चटा चुका है।
खतरनाक लड़का लगता है। आज नागराज के साथ इसको भी खत्म कर देते हैं। बगैर सुपर पावरों के यह हमारे सामने टिक नहीं पायेगा। पीछा करो इनका!
और थोड़ी ही दूर पर-
तुमसे कुछ पूछने तुम्हारे घर पर गया था मैं पर तुम वहां नहीं मिले। भारती के पास गया तो पता चला कि तुम उसी के पास थे। और अभी-अभी इस इलाके की तरफ आए हो।
वह मुझे फंसाने के लिए एक जाल था। और मैं उसमें फंस गया। ये तीनों अपने-आप में ही बहुत ताकतवर हैं। और एक साथ तो इनका मुकाबला कर पाना लगभग असंभव है।
वे तीन हैं तो हम भी दो हैं नागराज! इनका मिलकर सामना करेंगे।
हमारे पास हिम्मत है नागराज! और मैं इनकी शक्तियों के बारे में भी काफी कुछ समझ चुका हूं। तुम चिन्ता मत करो! मेरे पास एक योजना है...
बस! फिर मैं इधर ही आ गया!
...सुनो!
इन तीनों के पास कई सुपर पॉवर हैं ध्रुव! और इस वक्त मैं भी बेबस हूं...
...और तुम्हारे पास भी कोई सुपर पॉवर नहीं है।
और थोड़ी ही देर बाद-
वे रहे दोनों!
खत्म कर दो इनको!

अगले ही पल मिस किलर आश्चर्यचकित हो गई-

अरे! अरे! यह लड़का तो सीधे हमारी तरफ आ रहा है। इसकी ये हिम्मत! ...

... मैं अभी इसे परलोक पहुंचाती हूं!

ग्रैंडमास्टर रोबो ने, ध्रुव को ऐसे ऊर्जा वारों को छकाने का अच्छा अभ्यास कराया हुआ था-

इसलिए ध्रुव, मिस किलर के ऊर्जा वारों से बचता हुआ कुछ ही सैकंडों में मिस किलर तक पहुंच गया-

और अगले ही पल मिस किलर के हाथ में थमा हुआ यंत्र ध्रुव के हाथ में था-

और उससे अगले पल नागराज के हाथ में-

नागराज! कैच!

नागराज ने पिस्तौल नुमा यंत्र हाथ में आते ही, उसका रुख नागदन्त की तरफ करके ट्रिगर दबा दिया-

और मैं यह भी जानता हूं कि मिस किलर ने तेरे अन्दर पहले भी ऐसा ही एक यंत्र डाला था, जिसने नागश्री को समाप्त कर दिया। और चूंकि मिस किलर ने इसका प्रयोग तुझ पर ही पहलीबार किया था इसलिए उसे भी यह पता नहीं होगा कि यह यंत्र कितनी देर तक सक्रिय रहता है...
धड़ाक
इस कारण से मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि मिस किलर ने इस यंत्र का कोई काट भी तैयार कर रखा होगा। और वही तुझे देकर तेरे शरीर के अन्दर के यंत्र को नष्ट कर दिया होगा, वर्ना यह यंत्र तेरे शरीर में भी नागों को पैदा होने नहीं देता।...
...यह ध्रुव का आइडिया है। अब देखना यह है कि मिस किलर ने वाकई ऐसा कोई काट तैयार कर रखा है या नहीं।
...और यह जल्दी ही पता करना होगा। वर्ना अपनी कमजोर हालत में मैं ज्यादा देर तक नागदन्त पर काबू बनाए नहीं रख सकता!
सोच ले नागदन्त! उस यंत्र के काट का प्रयोग करके बचेगा, या मेरे हाथों से मरेगा!
म... मैं...
नागदन्त, यह नागराज की चाल है।...
...तुम इसकी बातों में मत आना!
चाल हो या न हो, मैं तो मारा ही जाऊंगा न!
...मैं तो बताऊंगा! क्योंकि अब सिर्फ नागराज ही मुझे बचा सकता है!
उससे पहले मैं तुझे भी खत्म कर दूंगी, और इसे भी!

और ऐसा करना फिलहाल मामूली काम होगा। क्योंकि तुम दोनों ही इस वक्त कमजोर अवस्था में हो, और मेरे ऊर्जा वारों को झेल नहीं पाओगे!

आह! दुष्ट वीराली!

तू मुझे ही मारने चली है।

जल्दी करो नागदन्त! इससे पहले कि यह हम दोनों को यमपुरी पहुंचा दे, मुझको सूक्ष्म यंत्रों को नष्ट करने का तरीका बता दो!

पिस्तौल के पीछे बने गोले को अपने शरीर से सटाओ। यह सारे यंत्रों को उस स्पर्श बिन्दु पर खींच लेगा, और फिर एक हल्के 'इलैक्ट्रिक डिस्चार्ज' से उनको नष्ट कर देगा।

यह मुझे तुमको सिर्फ इसलिए बताना पड़ा, क्योंकि पिस्तौल तुम्हारे पास ही थी...

...और सिर्फ यह पिस्तौल ही अपने द्वारा छोड़े गए सूक्ष्म यंत्रों को निष्क्रिय कर सकती है।

नागराज ने गोले को शरीर से सटाया और कुछ ही पलों बाद असर सामने आने लगा—

मिस किलर के कुछ समझने से पहले ही नागदन्त उस पर टूट चुका था–
धड़ाक
आह!
वाह! क्या सीन है! इनकी दोस्ती और दुश्मनी में तो कोई फर्क ही नहीं है!...
अब मुझे बस इतना इन्तजाम करना है कि मिस किलर नागदन्त से दूर न भाग पाए!
नागराज की सर्प सेना ने...
...नागदन्त और मिस किलर को मजबूती से जकड़ लिया–
अब तुम दोनों लड़ते रहो, तब तक मैं देख आऊं कि ध्रुव और नगीना कहां चले गए हैं!...
ध्रुव और नगीना ज्यादा दूर नहीं गए थे–
ओह! मेरी मोटरसाइकल!
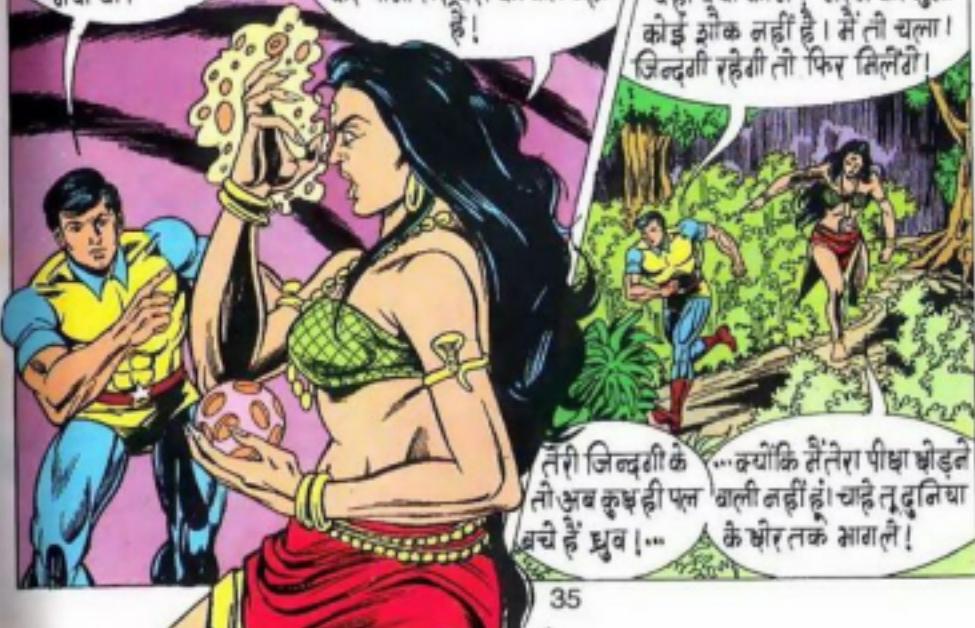
अभी तेरा भी हाल इस मोटरसाइकल जैसा ही जाएगा ध्रुव! नगीना की तंत्र-शक्ति तुम्हे भी जलाकर राख कर देगी!
तुम्हारी शक्ति का मुख्य स्रोत तुम्हारे गले में लटक रहा यह गोला है नगीना! अगर इसको मैं तुम्हारे शरीर से अलग कर दूं, तो तुम्हारी तंत्र-शक्तियां काफी हद तक बेकार हो जाएंगी।...
...इतना तो मैं तुम्हारी बातें सुनकर ही समझ गया था।
उसके लिए तुम्हे मेरे पास तक आना पड़ेगा, लड़के! और यह कर पाना तेरे बस की बात नहीं है!
अगर तुमको हरा पाना मेरे बस का काम नहीं है, तो फिर मेरा यहां क्या काम? मरने का मुझे कोई शौक नहीं है। मैं तो चला! जिन्दगी रहेगी तो फिर मिलेंगे!
तेरी जिन्दगी के तो अब कुछ ही पल बचे हैं ध्रुव!...
...क्योंकि मैं तेरा पीछा छोड़ने वाली नहीं हूं। चाहे तू दुनिया के छोर तक भाग ले!

मैं जानता था कि नगीना मेरे पीछे जरूर आएगी! इन खलनायकों के अन्दर झूठे अहंकार की भावना बहुत तेज होती है। और यही इनकी हार का कारण बनता है! अब नगीना को हराने के लिए मुझे सिर्फ दो चीजें चाहिए। अपनी 'स्टारलाइन' और पेड़ की एक डाल!
...अपने पैरों के नीचे नहीं देख रही थी-
अगले ही पल नगीना का शरीर हवा में उल्टा लटका हुआ था, और 'तंत्र गोला' जमीन पर पड़ा हुआ था-
बड़ी मामूली सी चाल थी नगीना! लेकिन तुम इसमें चुहिया की तरह फंस गई।
नगीना को यह पता नहीं था कि ध्रुव के पास वह दिमाग है जो तिनके से भी स्टील को काटने की क्षमता रखता है-
जाएगा कहां वह मच्छर? अभी मैं उसको ढूंढ लूंगी!
चारों तरफ दौड़ती हुई नगीना की नजरें...
ओह! तो तूने अपनी रस्सी से फन्दा बनाया था...

...लेकिन इससे तू यह मत समझना कि नगीना बेबस हो गई है। नगीना अभी भी अपनी क्षीण तंत्र शक्ति से तुझे तो खत्म कर ही सकती है।
अब नहीं नगीना!...
...अब नागराज, ध्रुव की मदद को आ गया है।
वाह, नागराज! आखिर तुमने उन दोनों को भी परास्त कर ही दिया।
मैंने नहीं, ध्रुव! हम दोनों ने! प्लान तो तुम्हारा ही बनाया हुआ था!
अब इन तीनों को किसी सुरक्षित कैद में...अरे! यह क्या?
ये दोनों तो गायब हो गए!
नगीना भी गायब हो गई है नागराज!

यह क्या हुआ, नागराज? यह तीनों एकाएक गायब कैसे हो गए?
मालूम नहीं ध्रुव! लेकिन देर-सवेर इस रहस्य पर से भी पर्दा उठ ही जाएगा। तुम बताओ कि तुम यहां पर क्यों आए थे?
तुमको कुछ दिखाना था नागराज! और वह चीज मैं तुम्हारे घर पर ही छोड़ आया हूं!
चलो, वहीं चलकर सब बताता हूं!
और फिर- नागराज के महानगर स्थित बंगले पर-
और फिर उस 'मसीहा' के पास से मिले इस 'संगीत यंत्र' और इस नक्शे को मैं यहां पर ले आया!
देखने से तो यह नक्शा 'पुरानी नगरी' का ही लगता है...
...बात कुछ समझ में नहीं आ रही है!...
शायद भारती चैनेल पर मसीहा वाली इस घटना के बारे में विस्तार से कुछ आ रहा हो।
क्लिक
भारती चैनेल' पर समाचार जारी थे-
प्रधानमंत्री श्री गुजराल ने महानगर में दस करोड़ की लागत से बनी नई अंतरिक्ष वेधशाला का उद्घाटन किया...
...स्टॉक मार्केट, खेल समाचार एवं मौसम की विस्तृत जानकारी इस ब्रेक के बाद!
12 O'CLOCK NEWS
अभी तक तो ऐसी कोई खबर नहीं आई। शायद आगे के समाचारों में...

ओह! कोई महत्त्वपूर्ण सूचना आ रही है।
महत्वपूर्ण सूचना
सूचना वाकई काफी महत्त्वपूर्ण थी-
इस प्रसारण को देखने वाले सभी धरती वासियों! सावधान! पृथ्वी का अन्त होने वाला है। सिर्फ 30 घंटे बाद! सारे पापी मरेंगे और सिर्फ वे ही बचेंगे जो प्रभु के दूत मसीहा की शरण में आएंगे।
अरे! यह तो वही आदमी है नागराज!
आसमान से प्रभु का कहर टूटेगा। मेरे साथ प्रभु से दया की भीख मांगो और अपने प्राण बचाओ!...
...इस संदेश की कैसटें सारी दुनिया के अग्रणी टी.वी. चैनेलों में भेजी जा चुकी हैं। सारी दुनिया कुछ ही देर में मसीहा के साथ होगी। आओ, प्रभु के दूत, देवदूत मसीहा के पास आओ।
क्या बकवास है! इस आदमी को मैंने पुरानी नगरी से कुछ देर पहले गुंडों के हमले से बचाया था जो अपनी रक्षा ही नहीं कर सकता वह दुनिया की रक्षा कैसे करेगा?
मैं भी इस पागल की बातों को बकवास मान लेता। जरूर मान लेता...
...अगर इसके पास यह अद्भुत यंत्र न होता तो! इसके कथन में कुछ सत्यता तो हो सकती है नागराज!
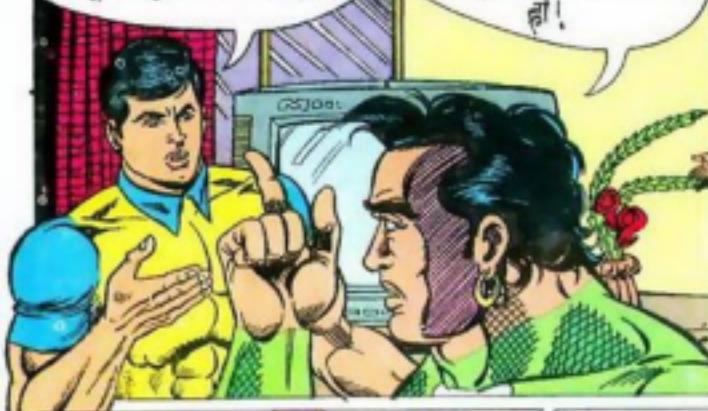
और इस सत्यता की परखने के लिए मुझे अंतरिक्ष वेधशाला जाना होगा। ... क्योंकि इस मसीहा के अनुसार 'प्रभु का कहर' आसमान से टूटेगा। यह जरूर किसी उल्का या धूमकेतु की बात कर रहा है।
तुम सिर्फ अपना समय बरबाद करोगे ध्रुव! मैं तो फिलहाल अपना समय उन तीन दुष्टों को ढूंढने में लगाऊंगा शायद उन्होंने और मसीहा ने कोई स्कीम मिलकर बनाई हो!
इस अभूतपूर्व प्रसारण से सभी लोग भौंचक्के रह गए थे-
यह क्या मजाक है मिस्टर पहलेजा? ऐसी कैसेट हमारी चैनेल पर चली कैसे?
म...मुझे भी धोखा दिया गया मिस भारती!
यह आदमी मेरे पास 'पर्यावरण संरक्षण' पर बनी एक संदेश की कैसेट लाया था मैंने चलाकर भी देखी थी। उसने इस संदेश के लिए मुझे डबल पैसे भी दिए थे। नकद।...
...शायद जब मैं पैसे गिन रहा था, तब उसने बड़ी सफाई से कैसेट बदल दी। बताइए मैं क्या करता?
गलती तो हुई ही है मिस्टर पहलेजा! और इसका क्या असर होगा, यह आप नहीं समझ रहे हैं।...
...यह मैसेज एक बार भारती चैनेल जैसे बड़े चैनल पर चल चुका है। इसको उदाहरण मानते हुए दुनिया के दूसरे बड़े चैनेल भी इसको चलाने में कोई नुकसान नहीं समझेंगे।
लेकिन जनता में आतंक फैल जाएगा। चारों तरफ भगदड़ मच जाएगी। और दुनिया के खत्म होने से पहले ही हो जाएगा दुनिया का विनाश।...

ध्रुव इस आतंक को रोकने की कोशिश में महानगर स्थित नई अंतरिक्ष वेधशाला में जा पहुंचा था-

उन दो धूर्तों वेंकटराजू और डॉक्टर साहा को बेनकाब करके तुमने हमारे देश के 'स्पेस-रिसर्च' कार्यक्रम पर बहुत उपकार किया है ध्रुव...

...तुम्हारे लिए तो हमारी इस नई और अत्याधुनिक वेधशाला की सभी सुविधाएं हाजिर हैं।

आपके मदद के प्रस्ताव के लिए मैं आभारी हूं डॉक्टर कादिर। परन्तु फिलहाल मुझे ऐसी किसी मदद की आवश्यकता नहीं है।

आपने भारती चैनेल पर हुए पृथ्वी के विनाश के प्रसारण के बारे में तो सुन ही लिया होगा। आप मुझे यह बताइए कि धरती से किसी उल्का या धूमकेतु के टकराने की संभावना कितनी है?

संभावनाएं तो बहुत हैं ध्रुव! लेकिन कम से कम अगले पचास सालों तक कोई नहीं। हमारा अंतरिक्ष विज्ञान इतना एडवांस हो चुका है कि पृथ्वी की तरफ आने वाले ऐसे किसी खतरे को हम सालों पहले देख सकते हैं। और उसके पथ से यह भी गणना कर सकते हैं कि वह पृथ्वी से कितनी दूरी से निकल जाएगा।

मुझे तो यह आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे जैसा बुद्धिमान आदमी उस पागल मसीहा की बातों पर यकीन कैसे कर रहा है!

जबकि कहीं से भी ऐसा कोई संकेत नहीं मिल रहा है कि...
डॉक्टर कादिर! डॉक्टर कादिर!
क्या बात है प्रोफेसर कृष्णा? आप इतने घबराए क्यों हैं?
ये... ये फोटोग्राफ! एक... एक नए तारे के!
...हमारे टेलिस्कोप ने अभी-अभी खींचे हैं। यह वास्तव में एक... धूमकेतु है। एक विशाल धूमकेतु!
और यह है इसकी कक्षा की रिपोर्ट। इसके अनुसार यह धूमकेतु पृथ्वी से टकराने जा रहा है।... अगले ३८ घंटे के अन्दर-अन्दर!
कक्षा= किसी ग्रह या तारे का पथ
असंभव! इतनी जल्दी यह धूमकेतु पृथ्वी तक पहुंच ही नहीं सकता है, प्रोफेसर कृष्णा! इसे अभी-अभी तो देखा गया है।
पहुंच सकता है सर! यह धूमकेतु अन्य धूमकेतुओं की तुलना में सौ गुना ज्यादा तेज गति से सफर कर रहा है!
ओह, भगवान!
यानी मसीहा की बात सही निकली डॉक्टर कादिर! यह एक संगीत यंत्र है। क्या इसके संगीत का आप किसी तरह से विश्लेषण कर सकते हैं!
यानी... यानी अगले ३८ घंटों में पृथ्वी तबाह हो जाएगी! विनाश हो जाएगा पृथ्वी का!...
...हमको तुरन्त प्रधान मंत्री को सूचना भेज देनी चाहिए।
इससे क्या होगा ध्रुव?
शायद इससे मुझे पृथ्वी का विनाश रोकने में कोई मदद मिल सके!

और फिर-
यह 'तरंग-विश्लेषक' सितारों से आने वाले सिग्नलों की रिकार्ड भी करता है और उनका विश्लेषण करके हमको यह भी बताता है कि वे किस प्रकार की तरंगें हैं और किस स्रोत से आई हैं।...
...इस यंत्र के संगीत को भी इसी पर चलाकर देखते हैं।
'तरंग विश्लेषक' ने संगीत का विश्लेषण शुरू कर दिया, और साथ ही साथ डॉक्टर कादिर की आँखें फैलती चली गईं-
UNKNOWN
NORMAL
या अल्लाह! यह संगीत तो किसी भी ध्वनि तरंग से मेल नहीं खा रहा है।...
...ऐसा तरंग-ग्राफ तो मैंने पहले कभी देखा ही नहीं!
देखा ही नहीं? इसका क्या मतलब है, डॉक्टर कादिर?
इसका मतलब है कि यह संगीत इस पृथ्वी का नहीं है। किसी और ग्रह का है ये संगीत!
ओह! अब मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूं। आप लोग पृथ्वी को अपनी तरह से बचाने की कोशिश कीजिए। मैं अपनी तरह से कोशिश करता हूं!
मुझे वहीं जाना पड़ेगा, जहां से मसीहा यह यंत्र लाया है।...
...और उस जगह को ढूंढने के बाद ही मुझे उस तरीके का पता चल सकता है जिससे कि पृथ्वी को बचाया जा सके।

इधर ध्रुव करोड़ों जिन्दगियों को बचाने का रास्ता तलाश रहा था-
तो कहीं और एक जिन्दगी को खत्म करने की जोड़-तोड़ हो रही थी-
यह हम लोग कहां आ गए हैं ?
हम शीशे के चैंबरों में कैद हैं। जरूर कोई हमको बन्दी बनाना चाहता है!
गलत! आप लोग मेरे बन्दी नहीं...
... बल्कि मेरे मेहमान हैं। ये शीशे के चैंबर तो मेरे 'टेलीपोर्टेशन चैंबर' हैं। इसलिए आप लोगों को इन्हीं चैंबरों के अन्दर प्रकट होना पड़ा। मिस्र के एक पिरामिड में हैं आप लोग।
स्वागतम्! तूतेन खामेन के दरबार में आपका स्वागत है।
सहयोग, मित्रो, सहयोग! कुछ तुम मुझे दे सकते हो और कुछ मैं तुम्हें दे सकता हूं। तुम लोगों की ही तरह नागराज ने मुझे भी शक्तिहीन कर दिया है। मेरा मुखौटा ही मेरी मुख्य शक्ति था। इस वक्त जो मुखौटा मैं पहने हुए हूं यह नकली है। सिर्फ एक मुखौटा। इसमें कोई शक्ति नहीं है!
तूतेन खामेन! नाम तो बहुत सुना है!
परन्तु मुलाकात पहली बार हो रही है। इस तरह हमको बुलाने का क्या मतलब है ?

पढ़ें : जादू का शहंशाह

और जब तक मैं अपना असली मुखौटा नहीं पहन लेता, तब तक मैं अपनी सबसे बड़ी शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। आत्मा को एक शरीर से दूसरे शरीर में ट्रांसमिट कर सकने की शक्ति। चाहे वह शरीर मृत ही क्यों न हो!

तो तुम अपना मुखौटा पहनते क्यों नहीं? तुम तो अपने-आपको अपराधियों का शहंशाह मानते हो!

... तो मैं तुम लोगों से वादा करता हूं कि मैं नागराज को खत्म कर दूंगा।

नागराज ने मेरे इस भ्रम को दूर कर दिया है, उसके द्वारा मेरा मुखौटा उतार लिए जाने के कारण मेरा मुखौटा* इन पिरामिडों के नीचे बनी असंख्य छोटी गुफाओं और सुरंगों के बीच कहीं पर बने 'शक्तिस्थल' पर पहुंच गया है!

और उन सुरंगों और गुफाओं में नागों का पहरा है! मेरी शक्तियां उन नागों पर व्यर्थ हैं। अगर नगीना और नागदन्त उन सांपों को कब्जे में लेकर उससे शक्ति-स्थल का पता लगा लें...

सौदा तो आकर्षक है। लेकिन फिलहाल हमारी शक्तियां भी हमारे पास नहीं हैं। और बर्बर नागशक्तियों के हम नागों पर काबू नहीं पा सकते!

तुम लोगों की शक्तियां एक बार मेरी बदौलत वापस आ चुकी हैं नगीना! उनको मैं दुबारा भी वापस ला सकती हूं।

बहुत अच्छे! तो फिर तय हो गया कि तुम मेरा काम करोगे और मैं तुम्हारा!

ये खलनायक, आने वाले खतरे से अंजान थे-

लेकिन पृथ्वी के विनाश की खबर पूरे संसार में फैल चुकी थी-

लोग बदहवास होकर इधर-उधर भाग रहे थे-

यह आखिरकार हो क्या रहा है?

पृथ्वी के विनाश की धमकियां तो हम लोग दिया करते थे!

*यह जानने के लिए पढ़ें : जादू का शहंशाह

यह धमकी नहीं, सच्चाई है ग्रैंडमास्टर! अब कोई दुनिया ही नहीं रहेगी, जिसको खत्म करने की हम धमकी दे सकें।
बौना वामन! तुम यहां पर कैसे? खैर छोड़ो... सिर्फ यह बताओ कि तुम यहां पर क्यों आए हो?
सब कुछ खत्म होने वाला है ग्रैंडमास्टर रोबो! और उसको बचाने की कोशिश करने के लिए मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।
मैं इसमें क्या कर सकता हूं? मैं धूमकेतु को रोक नहीं सकता!
तुम नहीं रोक सकते! लेकिन ध्रुव उससे बचने का कोई न कोई रास्ता जरूर निकाल सकता है। और उसमें हम ध्रुव की मदद कर सकते हैं। तुम्हारा संगठन दुनिया के कोने-कोने में फैला हुआ है। ध्रुव राजनगर में नहीं है। और सिर्फ तुम ही अपने आदमियों की मदद से उसे ढूंढ निकाल सकते हो!
तुम ठीक कह रहे हो! बैठकर मौत का इन्तजार करने से तो अच्छा है कि कुछ करके मौत से लड़ा जाए आखिरी दम तक!
समय धीरे-धीरे बीतता जा रहा था। और पृथ्वी तथा विनाश के मिलन का पल नजदीक आता जा रहा था-
यह रहा वह विनाशकारी धूमकेतु! दिन के उजाले में भी नजर आ रहा है। मुझे बहुत जल्दी काम करना होगा!
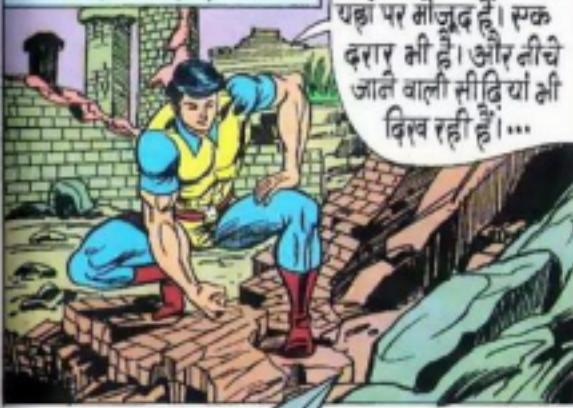
लेकिन इतनी बड़ी जगह में वह स्थान कैसे ढूंढा जाए, जहां से 'मसीहा' वह यंत्र लाया... एक मिनट! वातावरण में यह बारूद की महक! यह महक उधर से आ रही है। मुझे उसी तरफ जाना चाहिए।
विस्फोट हुए काफी समय बीत जाने के बाद भी बारूद से सना मलबा महक छोड़ रहा था-
ये रही वह जगह! विस्फोट होने के सारे लक्षण यहां पर मौजूद हैं। एक दरार भी है। और नीचे जाने वाली सीढ़ियां भी दिख रही हैं।...
...मुझे नीचे जाना चाहिए?
हे भगवान! यह क्या?
तुम भी देवता का धन लूटने आए हो! उसी दुष्ट के साथी हो तुम भी!
आ गए हो तो अब यहां से जिन्दा वापस नहीं जाओगे।...

★यह जानने के लिए पढ़ें : जादू का शहंशाह

एक आदमी रहस्यमय ढंग हाथ में लिए हुए? जैसे 'मसीहा' ने अपने टी॰वी॰ प्रसारण में थाम रखा था।...
...जरा मुझे दूरबीन तो देना सौडांगी!
नागराज, दूरबीन आंखों पर लगाते ही चौंक उठा-
अरे! यह तो सचमुच 'मसीहा' ही है। यह तूतेन खामन के अड्डे के इतनी पास क्या कर रहा है?
जरूर यह 'मसीहा' दुनिया के विनाश के लिए तूतेन खामन और बाकी तीनों खलनायकों के साथ मिलकर कोई षड्यंत्र रच रहा है।... पर मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।
यही पिरामिड है तूतेन खामन का अड्डा! हैलीकॉप्टर यहीं उतारो, नागराज!
नागराज, पृथ्वी का विनाश रोकने की कोशिश कर रहा था। लेकिन पृथ्वी के अन्य वासी भी चुपचाप बैठे हुए नहीं थे-
अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन...
...हम दुनिया की पांच सबसे बड़ी ताकतें हैं। और आज पृथ्वी को बचाने के लिए हमको अपने मतभेदों को भूलकर एकजुट हो जाना चाहिए।
चीन
फ्रांस

पृथ्वी का विनाश करने के लिए आ रहे धूमकेतु को अपने रास्ते से हटाने या नष्ट करने के लिए हमको अपने पास के सारे न्यूक्लियर शस्त्रों का प्रयोग करना पड़ेगा।

आप लोग ऐसा करने के लिए तैयार हैं या नहीं ?

इस में सोचने का कोई प्रश्न ही नहीं है राष्ट्रपति महोदय!

जब पृथ्वी ही नहीं रहेगी तो न्यूक्लियर शस्त्रों का भंडार तो वैसे ही खत्म हो जाएगा। हम सब इस योजना में सहयोग करने के लिए तैयार हैं।

बहुत अच्छे! तो आप सब लोग अपने-अपने देश की सभी न्यूक्लियर मिसाइलों का निशाना इस धूमकेतु पर लगा लीजिए।

हम अपनी सभी मिसाइलें एक साथ ही छोड़ेंगे।
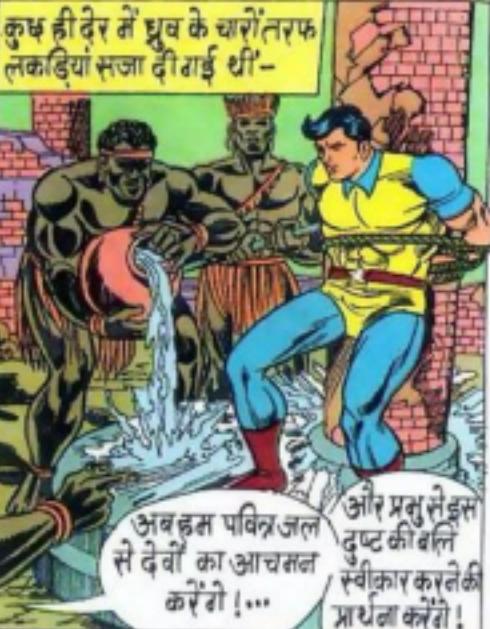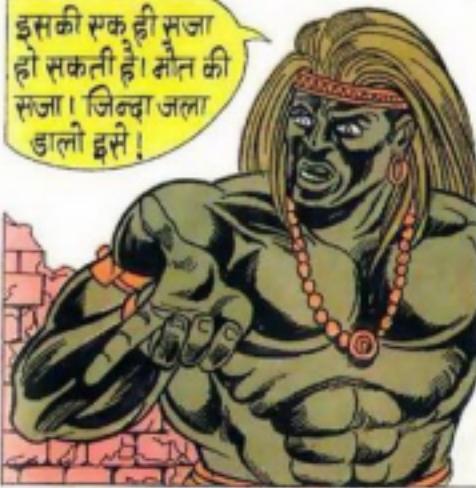
दूसरी तरफ ध्रुव चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहा था-

इसकी कमरबन्द में से हमको कुछ धातु के धारदार टुकड़े और यह यंत्र मिला है सरदार खबीना!

यह यंत्र तो देवता के चरणों में रखा था, जिसे वह दाढ़ी वाला दुष्ट उठाकर ले गया था। इसके पास यह यंत्र मिलने के बाद अब कोई शक नहीं रहा कि यह उसी दुष्ट का साथी है।

इसकी एक ही सजा हो सकती है। मौत की सजा। जिन्दा जला डालो इसे!
कुछ ही देर में ध्रुव के चारों तरफ लकड़ियां सजा दी गई थीं-
अब हम पवित्र जल से देवों का आचमन करेंगे!...
और प्रभु से इस दुष्ट की बलि स्वीकार करने की प्रार्थना करेंगे!
यह पानी! यही मेरे बचने का एकमात्र तरीका हो सकता है।
तड़ाक
ध्रुव की एक ही सधी हुई किक से घड़े का पानी लकड़ियों पर आ गिरा-
यह सचमुच दुष्ट प्राणी है। इसने पवित्र जल को लात मारी! शायद ये लकड़ियों को गीला करके जलने से बचना चाहता है। लेकिन हम गीली लकड़ियों को जलाकर इसे मारेंगे। लगा दो आग!
सरदार का आदेश मिलते ही लकड़ियों को सुलगा दिया गया-
और गीली लकड़ियों से गाढ़ा धुआं निकलकर ध्रुव को अपनी आगोश में समेटने लगा-

कुछ ही देर में धुआं उगलती गीली लकड़ियों ने आग पकड़ ली-
धुएं की मोटी चादर और आग की ऊंची लपटों ने कुछ मिनटों के लिए ध्रुव को कबायलियों की नजरों से ओझल कर दिया-
और जब आग की लपटें खत्म होने लगीं-
अरे! खंभे के साथ तो कोई भी नहीं है!
कहां गया वह दुष्ट?
मैं यहां हूं सरदार!
और न तो मैं उस दाढ़ी वाले का साथी हूं और न ही दुष्ट।...
...अगर मुझे जरा सा भी आभास होता कि यह एक पवित्र स्थल है तो मैं बगैर आप लोगों की इजाजत लिए यहां कभी न आता!
अपनी गंदी जान बचाने के लिए झूठ बोल रहा है तू! पर... पर तू आग से बचकर वहां कैसे पहुंच गया?
मैंने लकड़ियों पर पानी गिराया ही इसीलिए था ताकि मैं गीली लकड़ियों के धुएं की आड़ में अपने पैरों को मोड़, हाथों तक ले जा सकूं। और अपने बूट की हील में रखे कुछ तेज धार वाले औजार निकाल कर आजाद हो सकूं!

★ यह जानने के लिए पढ़ें: 'इच्छाधारी'

और इसी वक्त– वहां से दूर काहिरा के पिरामिडों के नीचे बनी गुफाओं और सुरंगों की भूल भुलैया में, सौडांगी नागराज को उसकी मंजिल की तरफ ले जा रही थी–

बस, नागराज! हम तूतेन खामेन के अड्डे तक पहुंचने ही वाले हैं। अगली दो सुरंगें पार करते ही तूतेन खामेन का इलाका शुरू हो जाता है।

बड़ा रहस्यमय है सब कुछ। लेकिन तुम तूतेन खामेन के बारे में इतना कुछ कैसे जानती हो? और इतने सालों तक तुम पिरामिडों के नीचे क्यों रह रही थी?...

मुझे अभी यह एहसास हो रहा है कि मैं तुम्हारी गुजरी जिन्दगी के बारे में कुछ नहीं जानता!

तूतेन खामेन हमारा युगों पुराना दुश्मन है नागराज! और मैं यहां पर अकेली नहीं रह रही थी। यहां पर तो इच्छाधारी नागों की एक पूरी बस्ती बसी हुई है। उनमें से कई मेरे सम्बन्धी और रिश्तेदार भी हैं।

वे यहां पर क्यों रहते हैं? अगर वे चाहें तो किसी और सुरक्षित स्थान पर अन्य इच्छाधारी नागों के साथ रह सकते हैं। चाहो तो मैं उनको नागद्वीप भिजवा दूं!

और उन शक्तियों और अपार धन को कब्जे में करने के बाद तूतेन खामेन जैसे खलनायक अजेय हो जाएंगे।...

... मेरे संबंधी नाग यहां पर अपने लिए नहीं, बल्कि दुनिया की सुरक्षा के लिए रहते हैं!

नहीं नागराज! उनको यहीं पर रहना होगा। सिर्फ वे ही तूतेन खामेन जैसी दुष्टात्माओं का मुकाबला कर सकते हैं।...

...क्योंकि इनका जादू उन नागों पर नहीं चलता। अगर वे सर्प भी यहां से चले गए तो इन पिरामिडों में रखी कई शक्तियों को ये दुष्ट लूट लेंगे।

फिर तुम मेरे साथ क्यों चली आई सौडांगी?

मुझे दुनिया घूमने का शौक है नागराज। और यह शौक तुम्हारे साथ रहकर पूरा भी हो रहा है। वैसे भी यहां पर एक नागिन के कम हो जाने से कोई फर्क तो पड़ता नहीं!

लगता है तुम्हें यहां से गए काफी समय हो गया है सौडांगी! अब ये सभी सुरंगें तूतेन खामेन यानी फैराओ के साम्राज्य में ही मिला ली गई हैं।

और तेरे सभी साथी नागों को बन्दी बना लिया गया है। अब तेरी आंखों के सामने ही उनको मौत के घाट उतारा जाएगा।

तूतेन खामेन की ममी सेना को तो मैंने नष्ट कर दिया था।...

और उसका मुखौटा गायब होने से उसकी कई अन्य शक्तियां भी नष्ट हो गई थीं फिर ये ममियां कहां से आईं?

बन्दी बना लिया गया! असंभव! तूतेन खामेन और तुम लोगों की शक्तियां उन पर बेअसर थीं।

फराओ ने हमको मुखौटा लुप्त होने से पहले ही दूसरी आत्माएं डाल-कर जीवित कर दिया था नागराज! परंतु हमारा इस्तेमाल करने से पहले ही तुमने उनको भागने पर मजबूर कर दिया।

तो फिर जैसे मैंने उनको खत्म किया था, वैसे ही तुमको भी खत्म कर दूंगा!

★ ममी : रासायनिक तत्वों से लिपटी पट्टियों में सुरक्षित रखे सैकड़ों हजारों वर्ष पुराने शव।

✱ फराओ : प्राचीन मिस्र के राजा को 'फराओ' कहते हैं। यह सब जानने के लिए पढ़ें : जादू का शहंशाह

हम उन ममियों की तरह नहीं हैं नागराज! वे बहुत प्राचीन ममिया थीं, जो तुम्हारे वार से टूट गईं। हम ऐसे नहीं हैं। हम नहीं टूटेंगे।...
...हम तुम्हें तोड़ेंगे। और तू हमें मार नहीं सकता! क्योंकि हम तो पहले से ही मरे हुए हैं।
इसीलिए इन पर अपनी शक्तियों का दूसरी तरह से वार करना पड़ेगा!
यह सही कह रहा है। मेरी किसी भी शक्ति का इन पर असर होने वाला नहीं!
तू कुछ भी कर ले नागराज! हमसे बच नहीं सकता!
अच्छा! तो फिर आओ! पकड़ लो मुझे!
बस इतना ध्यान रखना कि इससे पहले मैं तुमको ही न पकड़ लूं!
अब ये एकदम ठीक जगह पर खड़े हैं!
बाकी का काम छत पर चिपके मेरे सर्प कर देंगे।...
...जिन्होंने ऊपर की चट्टानों को खोद-खोदकर ढीला कर दिया है।...

ये दोनों तो अपना क्रियाकर्म करवा चुके सौडांगी!
तो फिर इसका क्रियाकर्म मैं कर देती हूं!
नहीं सौडांगी! इसको जान से मत मारना...
...इसकी बातों से लग रहा है कि पिछले कुछ समय से इस जगह में काफी बदलाव आया है! शायद तूतेन खामेन ने अपना अड्डा भी बदल दिया है! अगर ऐसा है तो यह मुर्दा हमको उस तक ले जाएगा!
नागराज तो अपने दुश्मन के काफी करीब पहुंच चुका था-
लेकिन ध्रुव अभी अपनी मंजिल से दूर था-
ओह! इतनी विशालकाय होने के बावजूद भी यह छिपकली काफी फुर्तीली है!...
...अगर एक बार इसने मुझे अपने पंजे के नीचे दबा लिया तो मैं हिल भी नहीं पाऊंगा!
ताड़
इसलिए सबसे पहले इसकी फुर्ती को कम करना होगा!...
...और उसके लिए इसके पैरों का ऐसा इन्तजाम करना होगा, ताकि यह तेजी से न चल पाए।

'हार्नड् टोड' को तेजी से चलने की जरूरत भी नहीं थी। क्योंकि उसके पास वार करने के लिए पंजों के अलावा और भी हथियार थे-
आऽऽह! इन जानवरों की पूंछें ऐसी इस भगवान ने क्यों बनाई हैं?
पर काबू नहीं पाया जा सकता!
वैसे तो ऐसे विशालकाय जानवरों को कब्जे में करने के लिए, बेहोशी वाली डॉर्टों का इस्तेमाल किया जाता है...
...लेकिन इन जंगलियों ने मेरी बेल्ट से बाकी चीजों के साथ-साथ नर्व गैस कैप्सूल भी निकाल लिए हैं।
दूसरा तरीका इनको जाल में फंसाकर बांधलेने का है। लेकिन यहां पर न तो फंसाने की चीज है, और न ही बांधने...
...एक मिनट! बांधने की चीज तो है। ...परमुझे उसका इस्तेमाल बहुत सोच-समझकर करना होगा!
अगले ही पल ध्रुव एक तरफ लपक गया-
ये दोनों खंभे काफी मजबूत लग रहे हैं...
...यह छिपकली इसको गिरा नहीं पाएगी। अब मैं अपनी 'नायलो-स्टील' की स्टारलाइन का एक सिरा इस खंभे में बांध दूंगा।
और दूसरा सिरा लेकर छिपकली के गले में फंदा डालते हुए...
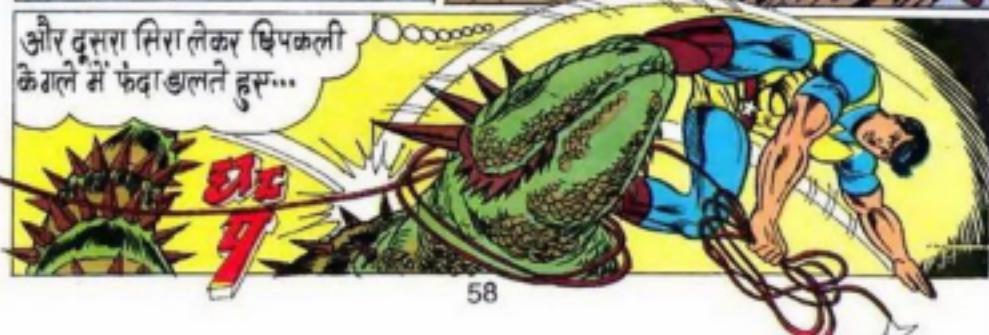
चारों तरफ से कबायली, ध्रुव की तरफ बढ़ने लगे। और ध्रुव के पास उनको रोक सकने का कोई तरीका नहीं था-

उधर- तूतेन खामेन की आधी योजना पूरी हो चुकी थी-

हमने तुम्हारा काम तो कर दिया, तूतेन खामेन! पर अब तुम अपना वादा कब पूरा करोगे?

हां! तुमको नागराज की मारना है। उसके लिए तुम नागराज तक जाओगे, या नागराज की अपने जादू द्वारा यहां पर बुला लोगे?

...वाह! वाह! सौडांगी का ख्याल एकदम सही था। तुम तीनों की जान को तूतेन खामेन ने ही बचाकर तुम लोगों को महानगर से यहां बुला लिया।

मैं जानता था कि इनके गायब होने का तरीका देखकर तुम नहीं तो सौडांगी तो अवश्य ही समझ जाएगी कि महान तूतेन खामेन का काम है। और फिर तुमको यहां ले आएगी।

क्योंकि तुझे मौत के घाट उतारने के लिए जिस जल्लाद को मैंने चुना है, उसका नाम है... सौडांगी!
सौडांगी! असंभव!
तुम पागल हो गए हो तूतेन खामेन! मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी!
सौडांगी अगर चाहे तो भी ऐसा नहीं कर सकती तूतेन खामेन! अगर तुम चारों मिलकर मुझे मार नहीं सकते तो सौडांगी मुझे कैसे मारेगी?
तुमको बाहर से वार करके मारना तो मुश्किल जरूर है नागराज, लेकिन अन्दर से वार करके तुमको मारना बच्चों का खेल है। सौडांगी अगर तुम्हारे शरीर के अन्दर ही सूक्ष्म रूप से अपने सामान्य रूप में आ जाए तो वह तुम्हारा शरीर फाड़कर बाहर निकल आएगी!
और शरीर फटते ही तुम्हारी आत्मा, परमात्मा में विलीन हो जाएगी!
और सौडांगी ऐसा क्यों करेगी?
क्योंकि उसको अपने संबंधियों से बहुत प्यार है नागराज!...
...उधर देखो! वे हैं सौडांगी के संबंधी। जिन्दगी और मौत के बीच में झूल रहे हैं...
...अब सौडांगी या तो तुमको मारेगी, या मैं इनको एक-एक करके फांसी पर लटका दूंगा!

ओह! तो तुमने इनको नागदंत और नगीना की सर्प शक्तियों की मदद से हराकर बन्दी बना लिया है। यानी इनको यहां पर लाने का तुम्हारा यही मकसद था।... ... क्योंकि तुम्हारी शक्तियां तो हम पर विफल रहती हैं!...

...पर यह करके तू मुझको धमका नहीं सकता! नागराज की एक जान पर हमारे सर्प तो क्या, पूरी सर्प जाति अपने प्राण न्यौछावर कर सकती है!

तूतेन खामेन के एक ही इशारे पर एक नागिन का बदन हवा में ऊपर खिंच गया। और उसका दम घुटना शुरू हो गया—

सौडांगी तड़प उठी—

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ करने के लिए तूतेन खामेन की तरफ बढ़ती...

...उसके चेहरे के भाव बदल गए—

और वह नागराज की तरफ पलट गई—

मैं पूरे होश में हूं नागराज! एक जान के कारण कई जानों की बलि नहीं चढ़ने दूंगी मैं। तुम मुझे अपने शरीर में प्रवेश करने से नहीं रोक सकते!...
... और अगर तुम्हारे सूक्ष्म सर्पों ने मुझे रोकने की चेष्टा की तो मैं उन्हें भी मार डालूंगी!
हे देव! यह सच कह रही है। सूक्ष्म रूप में सिर्फ मेरे सर्प ही इसे रोक सकते हैं, और वे इसके सामने टिक नहीं पाएंगे। अगर ये मेरे शरीर में प्रविष्ट हो गई तो मुझे अवश्य मार डालेगी!
मैं इसको ज्यादा देर तक छका नहीं पाऊंगा। मुझे भागना होगा!
भागेगा कहां नागराज? अपनी मौत से बचकर आज तक कोई नहीं भाग पाया!
उनको रोको, तूतेन खामेन! वे दोनों तो बाहर भाग गए!
जाएंगे कहां? जब तक ये इच्छाधारी नाग हमारी कैद में हैं...
... तब तक सौडांगी नागराज को कहीं भागने नहीं देगी!
तूतेन खामेन का ख्याल गलत नहीं था—
क्योंकि लगभग एक मिनट बाद ही नागराज और सौडांगी वापस कक्ष में आ चुके थे—

हाहाहा! शाबाश सोडांगी! अब आ अपने सामान्य रूप में! और फाड़ डाल नागराज का शरीर।

इधर नागराज, मौत के द्वार पर खड़ा हुआ था-

अमेरिका स्थित व्हाइट हाउस में-

पर एक समस्या और है सर!

अब क्या समस्या है?

हमारे पास मिसाइलें पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। आपको याद होगा, कुछ समय पहले एक उल्का पृथ्वी की तरफ गिर रही थी तब भी उसको रोकने के लिए हमने आणविक मिसाइलों का इस्तेमाल किया था। उसी कारण हमारे पास काफी कम मिसाइलें बची हैं।...

★ ये सब जानने के लिए पढ़ें ध्रुव का विशेषांक 'महाकाल'

हो सकता है। लेकिन फिलहाल हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है। अपने पास की सारी मिसाइलें इस्तेमाल कर लो।...
...और बाकी चार देशों को भी यही संदेश भेज दो।
और काहिरा में-
यह क्या हो रहा है? धूमकेतु पास आता जा रहा है। और मुझे प्रभु की तरफ से कोई संकेत नहीं...
... संकेत मिल गया!
जीवन दंडक चमक रहा है!
अब मैं इन सैकड़ों, हज़ारों, लाखों आंखों को प्रभु का चमत्कार दिखाऊंगा, नष्ट कर दूंगा इस जीवन दंडक से धूमकेतु को। और बचा लूंगा पृथ्वी को। पर... पर ये क्या?
लेकिन 'मसीहा' के कुछ कर पाने से पहले ही निशाने पर सधी मिसाइलें एक साथ धूमकेतु से जा टकराईं-
चारों तरफ से मिसाइलें धूमकेतु की तरफ बढ़ रही हैं। प्रभु के काम में दखल दे रहे हैं ये दुष्ट!
मैं इन दुष्ट पृथ्वी वालों की योजना को सफल नहीं होने दूंगा।
लेकिन-
मु...मुझे विश्वास नहीं हो रहा है सैकड़ों न्यूक्लियर मिसाइलों का सम्मिलित वार भी धूमकेतु को नष्ट नहीं कर सका!

हा हा हा! अपने आप ही विफल हो गए ये दुष्ट। अब 'मसीहा' रोकेगा धूमकेतु को। जीवन दंडक की ऊर्जा से।

अपने-आप ही चमक उठे जीवन-दंडक से ऊर्जा की एक किरण निकलकर धूमकेतु की तरफ लपकी-

और उस रहस्यमय ऊर्जा के एक ही वार ने धूमकेतु को टुकड़े-टुकड़े में बिखेर दिया। परन्तु कहीं कुछ गड़बड़ हो चुकी थी-

धूमकेतु का एक छोटा टुकड़ा धूमकेतु से अलग होकर अब भी पृथ्वी की तरफ बढ़ रहा था-

और उसके गिरने का स्थान था…

...काहिरा-

'मसीहा' के सामने एक बड़ा सा गड्ढा बनाते हुए वह टुकड़ा धरती में समा गया-

शायद 'जीवन दंडक' की ऊर्जा उसे वहां खींच लाई थी-

आस-पास की पूरी धरती इस टकराव से कांप उठी। ऊपर सतह पर भी-

और नीचे बनी गुफाएं और सुरंग भी-

यह क्या था? भूकम्प?

भूकम्प ही होगा! ऐसे मामूली झटके यहां पर लगते ही रहते हैं।

इसकी भूल जाओ और नागराज की मौत का नजारा देखो।

सौडांगी फाड़ डालो नागराज को!

अगले ही पल- नागराज चीख उठा। उसे देखने से ही यह साफ जाहिर हो रहा था कि उसके शरीर के अन्दर एक तेज दबाव पैदा हो रहा है-
सबसे पहले उसकी छाती को फाड़ता हुआ एक हाथ बाहर निकला, और खून बाहर टपकने लगा-
आह! ईयाा ाऊ
फिर उसका पूरा शरीर दो भागों में बंटने लगा-
नागराज के गले से ऐसी चीखें निकल रही थीं जैसे किसी शेर को काटा जा रहा हो-
और फिर चीखें शान्त हो गईं! खून से सनी सौडांगी, नागराज के लहू से लथपथ लाश से बाहर निकल आई-
तुम्हारा काम हो गया तूतेन खामेन...
...अब मेरे संबंधियों को मुक्त कर दो...
आज सौडांगी की भावनाएं उसके फर्ज पर हावी हो गई थीं-

मुक्त कर दूं? तेरे संबंधियों को? कर दूंगा। करना ही पड़ेगा! क्योंकि अब मुझे तुझसे नहीं इनसे काम है!...
...अब मैं तुझे बन्दी बनाकर इनको 'शक्ति-स्थल' से अपना मुखौटा लाने को विवश करूंगा!
नीच, धोखेबाज! तूने नागराज को मेरे हाथों धोखे से मरवा डाला!...
...अब मैं तुममें से किसी को जिन्दा नहीं छोड़ूंगी!
अपनी जान जाने के डर से तो इन्होंने मेरा काम नहीं किया...
...शायद तेरी जान जाने के डर से ये मेरा काम कर दें!...
...नगीना, नागदन्त! पकड़ लो इसे!
सौडांगी, फुंकारती हुई अकेले ही चारों से भिड़ गई-
थोड़ी देर तक तो कोई उसे हाथ तक नहीं लगा पाया-
धड़
शीघ्र ही सौडांगी उनकी गिरफ्त में थी-
आह! अब या तो मुझे मेरा मुखौटा वापस मिलेगा या तेरी गर्दन धड़ से अलग होगी!
लेकिन इतने शक्तिशाली शत्रुओं के सामने ज्यादा देर तक ठहर पाना असंभव काम था-
वहां से दूर- बहुत दूर एक और जांबाज शत्रुओं की गिरफ्त में आने वाला था-
इसके कारण प्रभु का कहर हम पर टूट ही पड़ा!...
...अब इसकी बलि लेकर ही प्रभु का क्रोध शान्त होगा!

ध्रुव को धूमकेतु के नष्ट होने का कारण नहीं पता था–

क्योंकि इतनी दूर से वह न तो मिसाइलों को धूमकेतु से टकराते देख पाया था और न ही मसीहा के ऊर्जा वार को धूमकेतु को नष्ट करते–

धूमकेतु एकाएक गायब हो गया है। पर एक छोटे टुकड़े को मैंने पृथ्वी की तरफ गिरते देखा है। अब तक तो वह पृथ्वी से टकरा चुका होगा। लेकिन लगता है कि वह कोई नुकसान नहीं कर पाया।...

... अब यहां पर मुझे कोई काम नहीं है। बस मुझे यहां से सुरक्षित निकलना है। और वह भी उस रहस्यमय संगीत यंत्र को लेकर। उस पर मैं कुछ और टेस्ट करवाना चाहता हूं।

पर यह काम आसान नहीं होगा! क्योंकि एक तो मैं थक चुका हूं, और ऊपर से इन जंगलियों की तादाद बहुत ज्यादा है।...

... इस वीराने में न तो कोई पशु दिख रहा है, और न ही पक्षी। जिसे मैं मदद के लिए बुला सकूं!

कोशिश करने के बावजूद भी, ध्रुव के जीतने की संभावनाएं कम होती जा रही थीं–

जैसे बिजली सी चमक उठी–

अरे! ऊपर हैलीकॉप्टर से कोई मेरी मदद कर रहा था। यहां पर मेरी मदद को कौन आ गया?
एक मिनट बाद ही ध्रुव को अपने सवाल का जवाब मिल गया-
एक आश्चर्य-जनक जवाब-
गेंडमास्टर रोबो, और बौना वामन!
तुम लोग यहां पर क्या कर रहे हो?
जवाब में रोबो ने ध्रुव को धूमकेतु से पृथ्वी को बचाने के सिलसिले में ध्रुव से मदद की बात बता दी-
और मुझे यह सूचना भी मिल गई थी कि तुमको पुरानी नगरी की तरफ आते देखा गया है। बस हम यहां आ गए।
ओह! लेकिन धूमकेतु का खतरा तो टल चुका है!
अभी नहीं टला है ध्रुव! धूमकेतु का एक टुकड़ा का हिरा में आकर गिरा है... ठीक वहीं, जहां पर 'मसीहा' अपने लाखों 'श्रद्धालुओं' के साथ खड़ा है...
...और अब धूमकेतु के उस टुकड़े से एक नई मुसीबत पैदा हो रही है और उसका कारण मसीहा खुद है। आओ, हैलीकॉप्टर में लगे वीडियो उपकरण पर इसका सीधा प्रसारण आ रहा है... स्पाई-सेटेलाइटों के द्वारा!

काहिरा में सचमुच एक विनाश का दूत जन्म ले रहा था-
यही है! यही है! प्रभु का वह रूप जो इस धरती से पाप का विनाश कर देगा!
ध्रुव भी इस नई मुसीबत के दर्शन करके स्तब्ध रह गया-
यह तो कोई परग्रही प्राणी लगता है, रोबी! हमको तुरन्त काहिरा पहुंचना होगा।
मेरा हैलीकॉप्टर ध्वनि से तिगुनी तेज गति से चलता है। यह हमको काहिरा पहुंचाने में ज्यादा वक्त नहीं लगाएगा।
ठीक है! पर उससे पहले मैं यहां से कुछ जरूरी चीजें साथ ले जाना चाहता हूं।
काहिरा में रेगिस्तानी सतह के नीचे भी काफी हलचल थी-
ये रही तुम्हारी प्यारी सौगातें नागो!
मेरे एक इशारे पर इसका भेजा बाहर आ गिरेगा।...
...अब बताओ, अगर मैं तुम लोगों को आजाद कर दूं तो तुम लोग 'शक्ति-स्थल' से मेरा मुखौटा ले आओगे या नहीं?
कभी नहीं!
तुम्हें जो करना है, कर ले!
ये हमारी चेतावनी को कोरी धमकी समझ रहे हैं, मिस किलर!...
...इनको सच्चाई दिखा दो... शुरूआत इसकी आंखें निकाल कर करो!

लेकिन इससे पहले कि मिस किलर तूतेन खामेन के आदेश पर अमल कर पाती एक चमत्कार हो गया-
ये... ये तो नागफनी सर्प है। नागराज के शरीर में वास करने वाला विशेष सर्प। पर... पर ये आया कहां से ?...
... इसको तो नागराज के साथ ही खत्म हो जाना चाहिए था।
जरूर हो जाता मिस किलर...
... अगर मैं खत्म हो चुका होता तो।
और हां, इन विशेष नागफनी सर्पों के चंगुल से छूटने की कोशिश मत करना। सफल नहीं हो पाओगे।
नागराज! त... तुम जिंदा कैसे हो ? हम सबने अपनी आंखों से सौडांगी को तुम्हारा शरीर फाड़कर बाहर निकलते देखा था।
... हां, वह खून जरूर मेरा था। जो मैंने खुद ही अपनी नस में छेद करके बाहर निकाला था।
जब मैं तुम पर लपक रही थी तभी नागराज ने मानसिक संकेतों द्वारा अपनी योजना मुझे बता दी थी।
सौडांगी ने मेरा शरीर नहीं बल्कि उस पर चढ़ी केंचुली को फाड़ा था। वह केंचुली जो मैंने तब बदली थी जब मैं और सौडांगी कुछ देर को कक्ष से बाहर चले गए थे।...
लेकिन इतना कुछ नाटक करके तुम लोगों को मिला क्या ? मैं खुद तो आजाद नहीं हो सकता, लेकिन तुम्हारे संबंधी नागों को अवश्य मार सकता हूं।

नहीं मार सकते, तूतेन खामेन! क्योंकि जिसको तुम 'नाटक' कह रहे हो वह इन बन्दी नागों को मुक्त करने के लिए ही रचाया गया था। जब सौडांगी को तुम लोग पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। उस दौरान मेरे नाग नगीना और नागदन्त की शक्तियों को परास्त करके उनकी जगह लेने में जुटे हुए थे!...

...इस वक्त इनको बांधने वाले नाग तुम लोगों के नहीं मेरे हैं!

अब मैं तुम लोगों को यहां से किसी सुरक्षित कैदखाने में...

...अरे! यह क्या?

सतह पर कुछ गड़बड़ हो रही है!

मैं अपनी वीडियो स्क्रीन पर अभी देखता हूं कि...

...हे देवी आइसिस! ये... ये तो किसी अजीब ही प्रकार का खतरनाक प्राणी लग रहा है!...

...किसी गड्ढे से निकल रहा है!

गड्ढा! ऐसा गड्ढा तो किसी उल्का के टकराने से ही बनता है! यानी...उस धूमकेतु का कोई टुकड़ा यहां पर टकराया है!

कैसा धूमकेतु?

तुम नहीं जानते?...

...यानी तुम्हारा 'मसीहा' से कोई संबंध नहीं है?

मसीहा? वो आदमी, जो सतह पर एक दंड लिए खड़ा है? उससे मेरा क्या मतलब?

लेकिन उसके हाथ के दंड से मुझे मतलब जरूर हो सकता है!...

क्योंकि अगर मैं इसको ठीक पहचान रहा हूं तो यह वही 'जीवन दंडक' है जिसका जिक्र मैंने सैकड़ों वर्षों पहले सुना था। और अगर मुझे ठीक से याद है तो यह 'जैविक ऊर्जा' खींच सकता है। इसको पाकर मेरे मुखौटे की कमी पूरी हो सकती है।

नागराज, यह प्राणी अगर धूमकेतु के टुकड़े से उत्पन्न हुआ है तो यह जरूर कोई परग्रहवासी है और पृथ्वी के लिए खतरा है। हम सब मिलकर ही इसको हरा सकते हैं।... तुम हमको आजाद कर दो।

क्योंकि इस मुसीबत के टलने तक हम दुश्मन नहीं दोस्त रहेंगे।
शायद तूतेनखामेन ठीक कह रहा है नागराज!
मुझे भी इसकी बात में दम लग रहा है, सौडांगी?...
...वैसे भी, इन सबको तो मैं दुबारा भी पकड़ सकता हूं। अगर पृथ्वी बची रही तो!

सतह पर स्थिति सचमुच खतरनाक रूप धारण कर रही थी–
जय हो! जय हो प्रभु के 'कल्कि अवतार' की! दुष्टों का विनाश करो प्रभु! विनाश करो!

ठीक इसी वक्त-
यस कमांडर! हमारे 'स्फ 73' लड़ाकू विमान ठीक उसी स्थान के ऊपर मंडरा रहे हैं जहां से उस रहस्यमय प्राणी को धूमकेतु के टुकड़े द्वारा बने गड्ढे से निकलते देखा गया था...
...खबर स्कदम सही है। यह प्राणी हर पल आकार में बढ़ता ही जा रहा है। क्या हम हमला करें?
U.S. AIR FORCE
नहीं कैप्टेन! इस हमले से वहां पर खड़े लाखों लोगों को भी नुकसान पहुंच सकता है। फिलहाल तुम वापस बेसलौट आओ!
लेकिन इससे पहले कि कैप्टेन, कमांडर के आदेश पर अमल कर पाता-
अगले ही पल-स्क बिजली सी लपलपाई-
और दोनों लड़ाकू विमानों के टुकड़े हवा में उड़ने लगे-
लेकिन मसीहा को 'पापियों' को सिर्फ इतना दंड मिलने से ही सन्तोष नहीं हुआ-
ये दुष्ट अवतार को नुकसान पहुंचाने आस हैं? पर मैं स्सा नहीं होने दूंगा।
नष्ट कर दो पापियों को, हे कल्कि अवतार!
ये दुष्ट फिर हमला करेंगे। हे कल्कि अवतार उस स्थान को ही जलाकर राख कर दो, जहां से ये आस हैं!...

चमकती हुई किरण सैकड़ों किलोमीटर की दूरी तय करती हुई...

अब तक दुनिया ने इन पापियों का अंजाम देख लिया होगा। अब या तो ये सारे प्रभु की शरण में आएंगे, या इनका विनाश हो जाएगा!

गलत, मसीहा! 'पापी' ये मानव नहीं, तू खुद है, जो पापियों की आड़ में निर्दोषों को मार रहा है!

कौन? ओह, नागराज! तो तुम भी प्रभु की शरण में आ ही गए!...

...और वह भी अपने साथियों के साथ!

होश में आओ मसीहा! यह प्रभु का रूप नहीं किसी दूसरे लोक का प्राणी है!...

...और अगर इसने विनाश बंद नहीं किया तो हमें इसको नष्ट करना होगा!

तू नश्वर प्राणी, प्रभु के अवतार को नष्ट करेगा!! छोटा मुंह बड़ी बात! उससे पहले तू ही नष्ट हो जाएगा। हे अवतार, नष्ट कर दो इन पांचों नास्तिकों को!

मसीहा के आदेश का तुरन्त पालन हुआ-
लेकिन किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचा, क्योंकि सबको इस हमले की पूरी उम्मीद थी-
अब हम क्या करें, नागराज? तुम्हारे पास कोई योजना है या नहीं?
तुम लोग इसका ध्यान बंटाने की कोशिश करो। और इसदौरान मैं इसके पास पहुंचकर इस पर अपने विषदंश का प्रयोग करूंगा! यह तुरन्त गलकर मर जाएगा।
क्योंकि इस पर विष फुंकार या सर्प सेना का असर तो होने से...
आऽऽह!
ओह! तूतेनखामेन को एक वार लग गया है!
आह! आश्चर्य है! मुझको यकीन नहीं हो रहा है। मैं तो एक आत्मा हूं। मुझ पर ऐसे ऊर्जा वारों का खास असर नहीं होता है। लेकिन इस वार से तो मुझे अपनी ऊर्जा खिंचती सी लगी।
अगर ये वार हमको लग गया होता तो हमारा भी यही हाल होता...

इसलिए अब हमको पलटकर जवाबी हमला करना पड़ेगा! इस पर मेरे साथ ही वार करो। एक साथ तगड़ा वार!
तीन तरफ से 'कल्कि अवतार' पर एक साथ वार हुए–
लेकिन जैसे ही तीनों वारों का स्पर्श उसके शरीर से हुआ–
आह! मेरे शरीर की शक्ति 'तंत्र-किरण' के जरिए खिंच रही है। और मैं अपनी तांत्रिक किरण को बन्द भी नहीं कर पा रही हूं।
मेरा भी यही हाल है...
...इस प्राणी ने हमारी किरणों को भी पकड़ लिया है।
म... मैं भी सर्प रस्सी को शरीर से अलग नहीं कर पा रहा हूं।
शीघ्र ही तीनों के बेहोश शरीर जमीन पर ऐसे पड़े हुए थे, जैसे रस निकलने के बाद गन्ने का छूछा–
मैं इसके शरीर तक तो शायद न पहुंच पाऊं लेकिन इन तंतुओं में से एक को जरूर पकड़ सकता हूं। मुझे झटका तो जरूर लगेगा...
...लेकिन बेहोश होने से पहले मैं अपना जहर इसके शरीर में जरूर पहुंचा दूंगा।
ओह! इस प्राणी को शीघ्र ही रोकना अब और भी जरूरी हो गया है!
नागराज ने अपने विषदंश तंतु में गड़ाए जरूर...

लेकिन उसका 'अवतार' पर कोई असर नहीं हुआ-
उल्टे तंतु ने अपना आकार बढ़ा कर नागराज के पूरे शरीर को अपनी लपेट में ले लिया, और नागराज की जैविक ऊर्जा तेजी से खिंचनी शुरू हो गई-
आह! यह तो वार उल्टा पड़ गया। इस प्राणी की शक्तियों को मैंने कम आंका था। काश मैंने ध्रुव की बात को गंभीरता से लिया होता।...
... क्योंकि अगर वह इस वक्त यहां होता तो इस जीव को नष्ट करने का कोई न कोई रास्ता जरूर निकाल... यह क्या?
अचानक जैसे नागराज की मुराद पूरी हो गई-
पहले तो स्टार ब्लेडों के सटीक निशाने ने तंतुओं को काटा...
...और फिर नागराज का शरीर 'कल्कि अवतार' से दूर खिंच गया-
ध्रुव! तुम यहां कैसे?
किस्मत से हम दोनों की मंजिल एक ही थी नागराज!
घबराओ नहीं नागराज! मैं इसको काबू में करने का तरीका साथ लाया हूं। यह ब्लैक बॉक्स! इससे... ओह! रोबो! बौना वामन!
यह जीव बहुत खतरनाक है ध्रुव! और 'मसीहा' किसी प्रकार से इसको नियंत्रित कर रहा है-
...अगर यह नष्ट नहीं हुआ तो मसीहा इसके जरिये पूरी दुनिया को घुटने टेकने पर मजबूर कर देगा!

ग्रैंडमास्टर रोबो और बौना वामन, दोनों ही हैलीकॉप्टर के फटने से पहले ही कूद चुके थे-
और रेत के टीले पर गिरने के कारण उनको ज्यादा चोट भी नहीं लगी-
ध्रुव ने बिना कोई वक्त खोए 'ब्लैक बॉक्स' को 'ऑन' करके 'कल्कि अवतार' के शरीर पर फेंक दिया-
सम्मोहित कर देने वाली संगीत की ध्वनि हवा में तैरने लगी। सब पर वेहोशी सी छाने लगी-
सिवाय कल्कि अवतार के। एक हल्के से दबाव से ही 'ब्लैक बॉक्स' के पुर्जे-पुर्जे अलग हो गए-
कड़क
और ध्रुव को इस धृष्टता की सजा भी तुरन्त मिल गई-
ध्रुव!
ओह! ध्रुव! तुम ठीक तो हो न?
आह! कम से कम जिन्दा महसूस कर रहा हूं।...
...लेकिन शरीर में लग रहा है जैसे कि कोई जान ही न हो!
यह 'जैविक ऊर्जा' का वार था ध्रुव! और इस वार ने तुम्हारी 'जैविक ऊर्जा' यानी 'बायलोजिकल एनर्जी' भी सोख ली है...
...ऐसा ही अगर एक और वार तुमको लग गया तो तुम नष्ट हो जाओगे!

और पास में ही रेत के एक टीले पर कोई और भी इस दृश्य को बड़े ध्यान से देख रहा था-

राक्षस चंडकाल-

मैं इस 'जीवन दंडक' की सूचना मिलते ही यहां पर आ गया था। यह 'जीवन-दंडक' अगर मेरे हाथों में आ गया तो फिर मानव तो क्या, देवों की पूरी सेना मिलकर भी मुझे हरा नहीं सकती।

परन्तु दंडक लेने के लिए मुझे इन्तजार करना होगा। मसीहा दंडक का प्रयोग जानता है। वह इसके जरिए मेरी ऊर्जा भी खींच लेगा। एक बार दंडक इसके हाथों से गिर जाए या अनाड़ी हाथों में आ जाए तो फिर मैं दंडक पर कब्जा कर लूंगा।

नागराज और ध्रुव ऐसा ही कुछ करना चाह रहे थे-

तुम्हारा 'श्योर-शॉट' तरीका तो फेल हो गया ध्रुव! अब क्या करें? ऐसे लड़ते रहने से कोई फायदा नहीं होगा। क्योंकि ये तो व्हेल और मच्छर की लड़ाई है!

हिम्मत मत हारो नागराज! शायद इस लड़ाई में आखिरकार व्हेल हम लोग ही साबित हों। ये प्राणी अगर पैदा हुआ है तो नष्ट भी होगा। वैसे इसकी गर्दन भी कहीं नहीं दिख रही जिसे काटा जा सके।

गर्दन होती तो भी काटने से कुछ फायदा नहीं होता ध्रुव! क्योंकि यह प्राणी पेड़ की तरह है। इसके तंतु पेड़ की जड़ों की तरह पृथ्वी के अंदर तक घुसे हुए हैं... ...जैसे पेड़ की डाल काटने से पेड़ नहीं मरता, वैसे ही इसे भी कहीं से काट लो नष्ट नहीं होगा!

पेड़! जड़ें! यह प्राणी नष्ट हो सकता है नागराज! नष्ट हो सकता है! जड़ों की तरह यह अपने तन्तुओं से ऊर्जा ले रहा है। पृथ्वी के गर्भ में भरे लावे की ऊर्जा। इसीलिए देखते ही देखते यह विशालकाय हो गया है!

अगर इसकी जड़ों को काट दिया जाए, तो यह ऊर्जा नहीं खींच पाएगा, और जितनी तेजी से बढ़ा है, उतनी ही तेजी से खत्म भी हो जाएगा। और यह काम तुम्हारी और रोबो की टीम ही कर सकती है।
मेरी और रोबो की टीम! वह कैसे?
तुम्हारे सूक्ष्म सर्प यह पता लगा सकते हैं कि इस प्राणी के तंतु जमीन के नीचे कहां-कहां पर हैं, और रोबो की किरण उन तंतुओं को नष्ट कर सकती है।
चलो, यह भी करके देख लेते हैं। इस काम में तो सौडांगी हमारी ज्यादा मदद कर सकती है...
...इसकी जमीन के नीचे फैली सुरंगों और गुफाओं की पूरी जानकारी है, आओ रोबो।
ग्रैंडमास्टर रोबो और नागराज के जाने के बाद बौनावामन ने अपना मुंह खोला—
तुम एक बात भूल गए ध्रुव! मसीहा के हाथों में थमा हुआ दंड! उसका इस जीव से कुछ संबंध है न?
है तो जरूर! क्योंकि दोनों में ही एक सी ऊर्जा दौड़ती लग रही है। पर इस दंड की असली उपयोगिता क्या है... यह सोचने में दिमाग जरूर खपाना पड़ेगा।
ये तो एकदम बेजान से लग रहे हैं! जैसे... जैसे इनकी ऊर्जा चूसी जा रही हो। मैं समझ गया बौना वामन!
ये दंड एक प्रकार का एंटीना है जो बायोलोजिकल एनर्जी खींचता है।
यहां पर लाखों की भीड़ में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो हमारे सवाल का जवाब दे सके।
कहां से होगा ये? सारे के सारे तो एकदम भोंदू लग... ओह!
इन सभी की ऊर्जा खिंच रही है। थोड़े ही समय में इनकी सारी ऊर्जा दंड के द्वारा इस प्राणी में स्थानांतरित हो जाएगी। यह प्राणी मानवों की जैविक ऊर्जा से ही मानवों पर वार कर रहा है।

ऐसा है तो हमारी भी ऊर्जा खिंच रही होगी।
जरूर खिंच रही होगी। लेकिन इन सबके मुकाबले हमको यहां पर आए काफी कम समय हुआ है। इसीलिए शायद हमको इसका आभास नहीं हो रहा है।
यानी इसके हाथ से दंड निकालना बहुत जरूरी है। पर कैसे ध्रुव?
इसका दंड 'जैविक ऊर्जा' खींचता है बौना वामन! हममें से कोई भी इसके पास से यह दंड नहीं ले सकता। यह काम सिर्फ तुम ही कर सकते हो।
म...मैं? वह कैसे?
जैविक ऊर्जा सिर्फ जीवित चीजों पर ही असर करती है वामन!
मशीनी चीजों पर नहीं। और मुझे पक्का यकीन है...
...कि तुम अपने रिमोट कंट्रोल युक्त मशीनी खिलौनों के बगैर कहीं नहीं जाते हो!
तुम मुझे बहुत अच्छी तरह से जानते हो ध्रुव! मेरा बैग ऐसे खिलौनों से भरा पड़ा है!
तो इंतजार किस बात का है? तुम मसीहा के हाथ से दंड निकलवाओ...
...और मैं मसीहा का इंतजाम करता हूं।
मसीहा के कुछ समझ पाने के पहले ही हमला शुरू हो गया—
हा हा हा! अब तू मुझ पर वार करेगा बौने? और वह भी इस खिलौने से? टैंक की गुलेल मार कर तोड़ना चाहता है तू?
देख, मैं इसका क्या हाल करता हूं?

जैविक ऊर्जा के एक ही वार ने खिलौने के टुकड़े-टुकड़े हवा में बिखेर दिए-

और बौना वामन यही चाहता था। क्योंकि खिलौना उड़न-तश्तरी के टूटते ही अंदर से दर्जनों की तादाद में मशीनी मक्खियां निकलकर, 'मसीहा' पर टूट पड़ीं-

और सतह के नीचे- नागराज के नाग सुरंगें बनाकर रीबी की जमीन के नीचे फैले तंतुओं तक पहुंचा रहे थे-

और रीबी की 'लेसर आई' की शक्तिशाली किरण उन तंतुओं को नष्ट कर रही थी-

सतह पर- मसीहा अपने-आप को बचाने में व्यस्त था-

लगता है, तुमको इनके डंकों से बहुत तकलीफ हो रही है मसीहा!

ओफ़! ये मक्खियां इनके डंक तो बहुत तेज हैं!

और मैं तुम जैसे 'भक्त' को कष्ट पाते नहीं देख सकता। इसलिए मैं तुमको बेहोशी की दुनिया में पहुंचाकर तुमको तकलीफ से छुटकारा दिला सकता हूं।
मसीहा का दिमाग बेहोशी की दुनिया की तरफ रवाना होते ही दंड उसके हाथ से छूटकर नीचे आ गिरा-
धाड़
और घायल होने का नाटक कर रहे तूतेन खामेन का पंजा दंड पर आ कसा-
आहा हा! अब मैं दुनिया का बादशाह बनूंगा।
मेरी जादुई ताकतों और जीवन-दंडक की शक्ति के आगे दुनिया की कोई भी ताकत मेरे सामने...
... यह किसने दंड पकड़ने की हिम्मत की है?
मैं ने तूतेन खामेन! और तंत्र शक्ति में मैं तुम्हारा भी बाप हूं। नाम है राक्षस चंडकाल। इसलिए यह दंड छोड़ दो और जहां से आए हो, वहीं लौट जाओ!
लौटेगा तो तू चंडकाल क्योंकि इस दंड से मैं तेरी आत्मा को ही निकाल लूंगा!
मेरा भी यही इरादा है तूतेन!
दोनों ही दंड के जरिए एक दूसरे की आत्मा को निकालने में जुट गए-
और उधर- पृथ्वी के गर्भ से लावे की ऊर्जा सोख रहे आखिरी तंतु को भी रोबो ने नष्ट कर दिया-

और इसका आश्चर्यजनक असर सतह पर तुरंत ही नजर आ गया-
वामन देखो! इस प्राणी के गोले फटने शुरू हो गए हैं। यानी नागराज और रोबो ने इसकी तंतु जड़ों को नष्ट कर दिया है।
देखते ही देखते 'कल्कि अवतार' के विशालकाय शरीर के स्थान पर लिसलिसे द्रव का एक तालाब बना हुआ था-
और कुछ ही पलों बाद-
खत्म हो गया यह प्राणी? यानी ध्रुव का सोचना एकदम दुरुस्त था! पर... पर यह क्या? दंड तो...
...दंड को लेने के लिए तूतेन खामेन और राक्षस चंडकाल आपस में उलझे हुए हैं नागराज! और इस लड़ाई को रोकने के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता!
ध्रुव या किसी और को कुछ करने की जरूरत भी नहीं थी। क्योंकि दोनों ही अपनी शक्तियों के प्रहारों को बढ़ाते ही जा रहे थे। और किसी भी ऊर्जा के एक साथ इतनी मात्रा में एकत्रित होने का एक ही नतीजा होता है...
...विस्फोट-
ओह! एक झमाके के साथ चंडकाल, तूतेन खामेन और जीवन दंड तीनों ही गायब हो गए हैं!
यह सब क्या था, ध्रुव? कुछ समझ में नहीं आया

खैर! फिलहाल तो पहले यहां का काम समेट...अरे!
...नागदंत, नगीना और मिस किलर कहां गायब हो गए?
समझ गया! जब मैं यहां नहीं था और तुम मसीहा से निबटने में व्यस्त होंगे...
...तभी ये तीनों मौका पाकर निकल भागी होंगी। क्योंकि इनकी समझ में भी तूतेन खामेन की दोहरी चाल आ गई होगी।
लेकिन मैं रोबो और बौना वामन का शुक्रिया जरूर अदा करना चाहूंगा...
कोई जरूरत नहीं, सुपर कमांडो ध्रुव! हमने तुम्हारा साथ सिर्फ इसलिए दिया क्योंकि इसमें हमारा भी स्वार्थ शामिल था!
मुसीबत खत्म, दोस्ती खत्म!
आज के बाद हम जब भी मिलेंगे दुश्मनों की तरह!
और फिर-
मसीहा को तो हमने इंटरपोल के हाथों में सौंप दिया ध्रुव! पर पूरी कहानी मुझे अभी समझ में नहीं आई! धूमकेतु का मसीहा से क्या संबंध था? ये दंड मसीहा को ही क्यों मिला? और...और वह 'कल्कि अवतार' क्या चीज था?
मुझे भी न तो कुछ समझ में आया नागराज, और न ही तुम्हारे किसी सवाल का जवाब मेरे पास है! पर अगर मेरा ख्याल सही है तो मैं तुमको एक ऐसी जगह पर ले चल रहा हूं जहां पर हर जवाब मौजूद है। और वह जगह है...
...पुरानी नगरी-
इस बार जंगली हमें तंग नहीं करेंगे। क्योंकि वे मुझसे भी एक बार टकरा चुके हैं। और शायद तुमसे भी। आओ!
ये... क्या है ध्रुव? लगता ही नहीं कि हम पृथ्वी पर ही हैं।
मुझे भी ऐसा ही आभास हो रहा है नागराज!

मसीहा के पदचिन्हों का पीछा करते-करते ध्रुव और नागराज, शीघ्र ही मुख्य कक्ष तक पहुंच गए-
वाह! यह मूर्ति तो किसी अन्य ग्रहवासी की लगती है नागराज!
गलत मानवो! हम दूसरे ग्रह के वासी नहीं हैं...
कौन हैं आप?
...सच पूछो तो हमारा कोई ग्रह नहीं है, और सारे ग्रह हमारे हैं।
हम्म! हमको तुम ब्रह्मांड का संरक्षक कह सकते हो।...
...हमारा काम ग्रहों पर जीवन की उत्पत्ति करना और उनके विकास पर नजर रखना है।
यानी... आप भगवान हैं?
नहीं! ईश्वर तो बहुत ऊपर है। हम तो उनके सबसे छोटे कर्मचारियों में से एक हैं।
आप लोग ग्रहों पर जीवन की उत्पत्ति कैसे करते हैं?
धूमकेतुओं के जरिए। धूमकेतु के केन्द्र में जीवनदायी जीवाणु होते हैं। परन्तु इसका प्रयोग विनाश के लिए भी होता है!
धूमकेतु के टकराने से किसी भी ग्रह का तत्कालिक जीवन नष्ट हो जाता है। और उसके केन्द्र के जीवाणु एक नए प्रकार के जीवन की उत्पत्ति करते हैं!
परंतु मसीहा का इससे क्या संबंध है?
कोई संबंध नहीं है। दरअसल जब कोई समाज प्रभु के चमत्कार पर पाप के रास्ते पर चलने लगता है तो हम उनको कई प्रकार से यह एहसास दिलाते हैं कि उनके ऊपर प्रभु है।
परंतु जब वे प्राणी यह नहीं समझते तो अंततः उस दिशाहीन समाज को नष्ट करना ही एकमात्र रास्ता बच जाता है।
पृथ्वी के साथ भी ऐसा ही हो रहा है। इसकारण हमने एक धूमकेतु को पृथ्वी की तरफ भेजा...

और 'मसीहा' के दिल में यह प्रेरणा उत्पन्न कर दी कि वह यहां पर आकर 'जीवन दंडक' ले ले। और इसके जरिए धूमकेतु को नष्ट करके पृथ्वीवासियों के दिलों में प्रभु की आस्था को बढ़ा दे!...

... यह दंड धूमकेतु के केन्द्र के जीवाणुओं की जैविक ऊर्जा को सोखकर उसी से धूमकेतु को नष्ट कर सकता है।

इसीलिए मसीहा के हाथ में दंड तभी चमका, जब धूमकेतु इतनी पास आ गया कि जीवन दंडक धूमकेतु की जैविक ऊर्जा को सोख सके। परन्तु हम भी हर होने वाली घटना को पहले से भांप नहीं सकते! इसलिए हमसे भी चूक हो गई।

पहले तो दंड, क्रियाशील होते ही धूमकेतु के साथ-साथ वहीं खड़े तारावी मानवों की ऊर्जा भी सोखने लगा और दूसरे परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के टकराने से धूमकेतु के जीवाणुओं पर एक अजीबो गरीब असर हुआ। एक तो वे जैविक ऊर्जा से नष्ट नहीं हुए, और दूसरे उनमें तेजी से द्विगुणित होकर विशाल रूप धरने की क्षमता आ गई।

परन्तु इससे पहले कि हमको हस्तक्षेप करना पड़ता तुम दोनों ने अपनी बुद्धि के बल पर उस जीव को नष्ट करके स्थिति को सामान्य बना दिया। अब हमें विश्वास हो गया है कि जिस समाज में तुम्हारे जैसे सच्चे प्राणी होंगे वह गलत रास्ते पर जाकर भी वापस आ सकता है।

लेकिन इस काम के लिए मसीहा को ही क्यों चुना गया? और वह ब्लैक-बॉक्स क्या था?

एक बात और जानना चाहता हूं संरक्षक। वह दंड, चंडकाल और नूतन स्वामिन कहां गायब हो गए?

शायद किसी दूसरे आयाम में चले गए हों। मुझे इसकी जानकारी नहीं, पर इतना जरूर जानता हूं कि वे नष्ट नहीं हुए हैं।

अब मेरा जाने का समय हो गया है। मैं जानता था कि तुम यहां आओगे और इसीलिए मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था...

ओह! संरक्षक के जाते ही मूर्ति, चमकते गोले सब गायब हो गए हैं।

चाहे सब गायब हो जाएं नागराज!...

समाप्त